जून २००८

दादावाणी

किमत रु.१०

तंत्री तथा संपादक :
दीपक देसाई
वर्ष: ३, अंक : ८
अखंड क्रमांक : ३२
जून, २००८

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सीटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ वे,
पो.ओ.: अडालज,
जि.: गांधीनगर-३८२४२१
फोन : (०७९)३९८३०१००
e-mail :
dadavani@dadabhagwan.org
अहमदाबाद : (079)27540408, 27543979
मुंबई : 9323528901-02
राजकोट त्रिमंदिर :
9924343478, 9274111393
U.S.A. : 785-271-0869
U.K.: 07956476253
Website : www.dadashri.org
www.dadabhagwan.org

, & :
Deepak Desai on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

/ :
Mahavideh Foundation
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता फी)
१५ साल का
भारत : ८०० रुपये
यु.एस.ए. : १०० डॉलर
यु.के. : ७५ पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यु.एस.ए. : 10 डॉलर
यु.के. : 7 पाउन्ड
भारत में D.D. / M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से पेयेबल अहमदाबाद का भेजे।

दादावाणी

ज्ञानी का अद्‌भुत प्रदान, यह वाणी विज्ञान

संपादकीय

क्या बिना वाणी के जगत व्यवहार की कल्पना संभव है? मनुष्य, अपने जीवन व्यवहार में इतना मग्न रहता है कि उसे यह विचार तक नहीं आता कि यह वाणी कैसे बोली जाती है? उसका उद्‌भवस्थान क्या होगा? उसका क्या स्वरूप है? परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री)ने व्यवहार, धर्म और अध्यात्म को लेकर वाणी संबंधी तमाम सैद्धांतिक स्पष्टीकरण वैज्ञानिक रूप से देकर जगत पर जो महान उपकार किया है, उसे कैसे भूल सकते हैं?

दादाश्री कहा करते थे कि यह जो बोलते हैं वह मैं नहीं बोलता लेकिन ऑरिजिनल टेपरिकार्डर बोल रहा है। वाणी, वह आत्मा का गुण नहीं है, किन्तु अहंकार की प्रेरणा से सूक्ष्म में टेपिंग होता है और फिर सूक्ष्म में से स्थूल होकर वाणी के रूप में उदय में आता है।

वे स्वमुख से निकली हुई वाणी के मालिक नहीं होते हैं और न ही उसके लिए गर्व लेते हैं। दादाश्री कहते हैं कि 'जैसे आप यह वाणी सुनते हैं वैसे मैं भी उसे सुनता हूँ। हम वाणी के निरंतर ज्ञाता-द्रष्टा होते हैं। जब वाणी नहीं बोली जा रही हो तब हम, ३६० डिग्रीवाले कैवल्यज्ञान स्वरूपी दादा भगवान के साथ अभेद होते हैं। ज्ञानीपुरुष ए.एम.पटेल ३५६ डिग्री पर है इसलिए टेपरिकार्ड में चार डिग्री की भूल होती है, उसे हम जानते हैं और उनके पास प्रतिक्रमण भी करवाते हैं।' भीतर जो दर्शन उत्पन्न हुआ है उसके आधार पर यह वाणी निकलती है, जिसमें खुद निर्लेप होते हैं, निरंतर शुद्ध उपयोग में होते हैं, परमानंद में होते हैं और यह निरालंब वाणी साहजिक रूप से निकला करती है।

दादाश्री विशेष स्पष्टीकरण करते हुए बताते हैं कि 'हम पहाड़ की चोटी (ज्ञानशिखर) पर से देखकर बोलते हैं। कैवल्यज्ञान में देखकर बोलते हैं। यह वाणी चेतन को स्पर्श करके निकली साक्षात् सरस्वती है, जो शास्त्रों की पुनर्रचना के लायक होती है।' ज्ञानीपुरुष तो 'वर्ल्ड की ऑब्जर्वेटरी' है। इसलिए किसी भी प्रकार के मालिकानाभाव के बगैर, लाखों प्रश्नों के सर्व समाधानकारी स्पष्टीकरण हुए हैं। यह अंतिम स्टेशन (मोक्ष) की बातें हैं। अंतिम विज्ञान प्रश्नोत्तर के रूप में होता है और वही सत्‌धर्म प्राप्त करवाता है।''

ज्ञानी की सहज वाणी देशना के रूप में होती है। अहंकार के पूर्ण विलय के बाद देशना की शुरूआत होती है। ज्ञानीपुरुष की वाणी देशना की शुरूआत कहलाए और तीर्थंकरों की वाणी वह अंतिम देशना कहलाए। इसलिए किसी भी धर्म का प्रमाण नहीं दु:खे ऐसी निष्पक्षपाती और सबको मंत्रमुग्ध करनेवाली यह ज्ञानवाणी, जगत कल्याण का बहुत बड़ा निमित्त सिद्ध हो रही है।

वर्तमानकाल के मनुष्यों की पुण्याई तो देखिए कि चौबीस तीर्थंकरों के ज्ञान का लेखा-जोखा, विज्ञान के रूप में, सब समझ पाए ऐसी लोकभाषा में प्राप्त हुआ है। ऐसे अद्‌भुत वाणी विज्ञान को यथार्थ रूप से समझें और उसे आत्मसात् करने के पुरुषार्थ में लग जाएँ। इतना ही नहीं, साक्षात् सरस्वती समान ज्ञानी की यह वीतराग वाणी युगों तक मोक्षमार्ग को प्रकाशमान करती रहे ऐसी हृदयपूर्ण भावना करके कृतार्थ बनें।

दीपक देसाई ...

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ है अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। पाठक जहाँ पर भी चंदुभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर कोई बात आप समझ न पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधार कर समाधान प्राप्त करें। भाषांतर में कोई कमी नज़र आये तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

ज्ञानी का अद्‌भुत प्रदान, यह वाणी विज्ञान

वाणी यह ऑरिजिनल टेपरिकार्डर

दादाश्री : यह जो बोलते हैं वह कौन बोलता है?

प्रश्नकर्ता : आप, दादा भगवान बोलते हैं।

दादाश्री : यह जो दिखाई देते हैं वे भादरण के पटेल हैं और अंदर 'दादा भगवान' प्रकट हुए हैं। उनके साथ मैं रहता हूँ, एकता से। और यह जो बोलता है वह टेपरिकार्डर है, मैं खुद नहीं बोलता हूँ, मेरी बोलने की शक्ति ही नहीं है न? यह तो ऑरिजिनल टेपरिकार्डर बोल रहा है। उस पर से दूसरा टेपरिकार्डर करना हो तो हो सके, तीसरा हो सके, चौथा हो सके... (नक़ल हो सके) और तुझे तो ऐसा ही है कि, 'मैं खुद बोलता हूँ।' खुद बोलता है इसलिए तू 'पॅज़ल' में है और मैं 'पॅज़ल' को सॉल्व कर के (समस्या सुलझाकर) बैठा हूँ।

यह जो वाणी बोलता है, वह 'ऑरिजिनल टेपरिकार्डर' है, आपकी वाणी भी 'ऑरिजिनल टेपरिकार्डर' है। पर आपको अहंकार है इसलिए 'मैं बोला, मैं बोला', ऐसा किया करते हैं। हमें अहंकार नहीं होता इसलिए ऐसी कोई झँझट नहीं होती।

वाणी, आत्मा का गुण नहीं है

प्रश्नकर्ता : तो क्या आत्मा बोलता नहीं है?

दादाश्री : आत्मा बोल सके ऐसा है ही नहीं। आत्मा में वाणी नाम का गुणधर्म ही नहीं है। शब्द, आत्मा का गुणधर्म नहीं है और पुद्‌गल का भी गुणधर्म नहीं है। यदि उनका वह गुणधर्म होता तो हमेशा के लिए होता, परंतु उसका तो नाश होता है न? वास्तव में शब्द यह पुद्‌गल का पर्याय है। दो परमाणुओं के टकराने से आवाज़ उत्पन्न होती है। होर्न दबाने पर क्या होता है? वाणी (आवाज़) निकलती है।

प्रश्नकर्ता : ऐसे दबाने पर जो वाणी निकले वह तो यांत्रिक वाणी निकली कहलाए। लेकिन ज्ञानी की वाणी तो यांत्रिक रूप से नहीं निकलती न?

दादाश्री : हमारी वाणी 'टेपरिकार्डर' है और आपकी भी वाणी 'टेपरिकार्डर' है। केवल 'ज्ञानी' की वाणी स्यादवाद होती है।

प्रश्नकर्ता : मतलब स्यादवाद वाणी क्या वह चेतन वाणी कहलाए?

दादाश्री : वाणी चेतन हो ही नहीं सकती फिर चाहे वह हमारी (दादाश्री) हो या आपकी हो। हाँ, हमारी वाणी संपूर्ण शुद्ध चेतन को स्पर्श करके निकलती है इसलिए चेतन समान भासमान होती है।

प्रश्नकर्ता : वाणी जड़ है, क्या ऐसा कह सकें?

दादाश्री : वाणी जड़ है ऐसा कहा जाए, लेकिन चेतन है ऐसा नहीं कह सकते। मोटर का होर्न दबाने से वह भों-भों करेगा या नहीं? जैसे ही उसे दबाएँ कि तुरंत अंदर के परमाणु दौड़-दौड़ करने लगे, एक-दूसरे के साथ टकराएँ और उससे सारी आवाज़ उत्पन्न होती है। बाजे में से कैसी आवाज़ें निकलती हैं? वैसे ही (वाणी वह) बाज़े में से टकरा-टकराकर

निकलता है सब। यह सब 'मिकेनिकल' है। आत्मा खुद परमात्मा स्वरूप है।

वाणी का टेपिंग

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं कि 'यह मैं नहीं बोलता पर टेपरिकार्डर बोलता है', तो ऐसा कैसे है? इसे समझाइये।

दादाश्री : उसके गुणधर्म के अनुसार। आत्मा के गुणधर्म इसमें नहीं हैं, पुद्गल के भी गुणधर्म नहीं हैं। वह पुद्गल की अवस्था है। वाणी अहंकार की प्रेरणा से टेप होती है। अहंकार खुद उसे टेप नहीं करता। केवल उसकी प्रेरणा से टेप होता है। अंदर अहंकार प्रेरणा करता है कि कोर्ट में ऐसे बोलना है, वैसे बोलना है, उसके बाद ऐसा टेप निकलता है।

प्रश्नकर्ता : आपकी वाणी कब टेप हुई होगी?

दादाश्री : पिछले जनम में टेप हुई थी, जो इस जनम में बोली जाती है।

प्रश्नकर्ता : वाणी सूक्ष्म में से स्थूल हुई है?

दादाश्री : हाँ, सूक्ष्म में से स्थूल हुई है।

प्रश्नकर्ता : शुरूआत में वह सूक्ष्म कहाँ से पैदा हुआ?

दादाश्री : वह उस स्थूल में से फिर सूक्ष्म उत्पन्न होता है। स्थूल होता है उसमें राग-द्वेष होने के कारण फिर से नया सूक्ष्म खड़ा होता है। यदि एक ही अवतार वीतराग रहें तो समाप्त हो जाए सब, लेकिन फिर से बीज डालते ही रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : आप जो बोलते हैं क्या उस भाषा को समाधि भाषा कहा जाए?

दादाश्री : आप समाधि भाषा कहना चाहें तो समाधि भाषा कहिये, स्यादवाद कहें तो स्यादवाद है। हमारी भाषा किसीको भी दुःखदायी नहीं होती, प्रत्येक को सुखदायी लगे। इस वाणी के हम मालिक हैं ही नहीं। पूरा अहंकार शून्य हो जाए तब रिकार्ड स्वच्छ हो जाएँ। हमें ज्ञान प्रकट होने के बाद, हमारा रिकार्ड स्वच्छ हो गया।

यह तो टेपरिकार्डर बोलता है

श्रीमद् राजचंद्रजी ने क्या कहा? कि जिन्हें भगवान वश हो गए हैं, ऐसे ज्ञानीपुरुष में कौन कौन से गुण नहीं होते? गर्व, गरकाब (डूबा हुआ-लीन), अंतरंग स्पृहा नहीं होती, उन्मत्तता नहीं होती।

प्रश्नकर्ता : वे गुण भीतर सूक्ष्म रूप में रहें हों, लेकिन ज्ञान की उँचाई पर जाने के पश्चात् वे जाएँ। पर तब तक नहीं जाते।

दादाश्री : लेकिन उनके जाने के बाद ही ज्ञानी कहलाए। उनके जाने के पश्चात् ही हम कहें कि यह टेपरिकार्डर बोलता है।

अहंकार नहीं, इसलिए बोलनेवाले वह 'हम' नहीं

प्रश्नकर्ता : बोलते समय, क्या यह टेपरिकार्डर को, अंबालाल पटेल का या ज्ञानी का सहारा लेना पड़े?

दादाश्री : सहारा नहीं लेना पड़ता। यह टेपरिकार्डर तो अपने आप ही बोला करे।

खुद को बोलना हो तब भी नहीं बोल पाए, क्या कभी ऐसा नहीं हुआ?

प्रश्नकर्ता : हाँ जी, ऐसा होता है कोर्ट में केस की पूरी तैयारी के साथ जाए फिर भी वहाँ नहीं बोल पाए और कभी किसी वक्त बिना तैयारी के अच्छा ही बोला जाए।

दादाश्री : इसलिए यह टेपरिकार्डर बोलता है। और लोग तो केवल अहंकार करते हैं कि, 'मैं बोला'। यह हम (दादाश्री) अकेले ही ऐसा बोले हैं कि, 'यह टेपरिकार्डर बोलता है'।

यह अंबालाल मूलजीभाई की वाणी अलग प्रकार की और 'दादा भगवान' की वाणी अलग प्रकार की, ऐसा कुछ नहीं है। यह आप जो बोलते हैं वह

भी टेपरिकार्डर है। यानी मुझे पूछना ज़रूरी नहीं है कि यह अंबालाल मूलजीभाई बोलते हैं कि नहीं, ऐसा? यह मेरे ज्ञान में ही आ गया है कि यह बोलना सब टेपरिकार्डर ही है और अहंकार उड़ गया (खतम हो गया) मतलब बोलनेवाला उड़ गया।

हमें वह भूमिका याद ही नहीं होती। 'हम' अपने स्वरूप में ही रहते हैं। यह आपके साथ बात करें उतना समय यहाँ (व्यवहार में) आना होता है, वह भी ज्ञाता-द्रष्टा स्वरूप में बाकी हम निरंतर चौबीसों घंटे, निरंतर स्वरूप में रहनेवाले।

कुदरती शक्ति से निकले यह वाणी

प्रश्नकर्ता : आप जो बोलते हैं, वह बिना मेहनत के बोलते हैं?

दादाश्री : इसलिए मैं टेपरिकार्डर कहता हूँ न! लोग मुझसे पूछा करते हैं कि, 'आप इतना सारा कैसे बोला करते हैं?' यह तो टेप बोलता है इसलिए इसमें मेरी मेहनत नहीं है। मैं बोलता ही नहीं हूँ इसलिए मेरी फ्रेशनेस (ताज़गी) जाती नहीं है।

प्रश्नकर्ता : कईबार विचार आता है कि हम यदि घंटे-दो घंटे बोलें तब भी यदि बीच में ब्रेक आ जाए तो खड़े होकर एक दो चक्कर लगाने बाहर चले जाएँ। जब कि यहाँ तो आप लगातार बोला ही करते हैं।

दादाश्री : कईबार तो दस-दस घंटे वाणी निकला ही करती है, हम एक ही जगह स्थिर बैठे रहते हैं, इसके पीछे भी कोई कुदरती शक्ति होगी न? साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडन्स है न? यह गप्प नहीं है। अनेक लोगों का कल्याण होनेवाला हो तब ऐसा उत्पन्न हो जाए, वर्ना ऐसा उत्पन्न नहीं होता न?

जो बोल रहा है, वह 'मैं' नहीं

प्रश्नकर्ता : अब आप मुझे यह समझाइये कि इस उम्र में आप लगातार बोलते हैं, इतना कुछ करते हैं इसके पीछे यह कौन-सी शक्ति है? यह मुझे जानना है।

दादाश्री : ऐसा है न, राजा में यदि शक्ति नहीं रही तो चलता है, लशकर के मनुष्यों को शक्ति चाहिए। राजा तो ऑर्डर (हुक्म) करे कि, 'तुम्हें फलाँ के साथ लड़ना है।' बस, इतना ही बोला कि वे लोग अपनी शक्ति लगाकर लड़ने लगे। लेकिन अपने आप नहीं, 'बाइ ऑर्डर ऑफ द किंग' होता है। मतलब 'बाइ ऑर्डर' सबकुछ होता है। भगवान से कुछ होता नहीं है।

यह सत्संग एक दिन के लिए भी बंद नहीं रहा क्योंकि यदि हम बोले होते, तो हम से बोला जाए ऐसा नहीं था। आवाज़ ही नहीं निकलती थी। और इस समय रौब से निकलती है। (पहले), टेपरिकार्डर मानों पिन घिस गया हो ऐसे बोलता था। अब पिन नया डाला हो ऐसा मुझे लगता है।

पिन बहुत घिस जाता है। यह तो टेपरिकार्डर बोलता है इसलिए शक्ति खर्च नहीं होती। दो घंटे से ज्यादा मनुष्य बोल नहीं सकता। और मैं (रात के) साढे ग्यारह तक बोलता हूँ, टेपरिकार्डर है इसलिए।

बिना मालिकानापन की वाणी

एक व्यक्ति कहता है कि, 'वैसे तो मनुष्य एक घंटे से ज्यादा बोल नहीं सकता और आप कितने घंटे बोला करते हैं?' मैंने कहा, 'यह टेपरिकार्डर है इसलिए बजता रहता है वर्ना बोलनेवाला तो थक जाएगा।' 'मैं बोलता हूँ' कहूँ तो थक जाए या नहीं थक जाए? और यह तो टेपरिकार्डर बजता ही रहे अपने आप।

प्रश्नकर्ता : हमारे यहाँ सब आपस में बातें करते थे कि दादा भगवान दिखने में ऐसे (दुबले-पतले) लगते हैं पर जब ज्ञान प्रदान किया तब आवाज़ ऐसी थी मानों किसी बड़े शेर की गर्जना सुनाई पड़ती हो ऐसा लगता था, सब ऐसा-ऐसा बता रहे थे।

दादाश्री : किसी और मनुष्य की ऐसी आवाज़ ही नहीं हो सकती! मैं ऐसे बोलूँ नहीं तब तक मेरा वचनबल काम नहीं करता! तब तक यह ज्ञान उसकी समझ में नहीं आता, और ऐसी आवाज़ निकलने पर, शब्द अंदर प्रवेश कर गया वह फिर निकलता नहीं।

मैं ज्ञान बुलवाता हूँ (ज्ञानविधि के समय) तब सभी को घंटाभर बोलना होता है, उस समय ज्ञान में बैठनेवालों में बड़े-बड़े मज़बूत मनुष्य होते हैं वे भी अंत में आखिरी वाक्यों में तो थक जाते हैं इसलिए फिर वाक्य मन में बोलें क्योंकि ऊँची आवाज़ में बोल नहीं पाते। वे थक जाते हैं बेचारे, क्योंकि वे खुद बोलते हैं। और मुझे उन्नासी साल की उम्र में भी देखिये न, कैसा बड़ा जबरदस्त टेपरिकार्डर बजता है, बजता है न? क्योंकि बिना मालिकानापन की वाणी है इसलिए थकान नहीं लगती, इसलिए मशीनरी प्युअॅर रहा करे, अच्छी रहे।

यह तो कुदरती गिफ्ट

हमारी व्यवहारिक वाणी के अलावा जो सारी बातें होती है, वह त्रिकाल सत्य है। उसे कोई मिटा नहीं सकता। मैंने जब से बोलना शुरू किया (ज्ञान प्रकट होने के बाद) तब से एक भी शब्द मिटाना नहीं पड़ा। यह जो मैं बोलता हूँ वह प्रत्येक शब्द सच्चा है, तब क्या यह मेरा सयानापन है? हमारा यह विज्ञान वह मेरा सयानापन नहीं है, यह तो गिफ्ट (भेंट) है। यह मेरा सयानापन कैसे कहलाए? क्योंकि मुझे तो खत तक लिखना नहीं आता है। लोक कल्याण के निमित्त हेतु यह गिफ्ट है और उस गिफ्ट के लिए मेरी पूरी तैयारी है।

प्रश्नकर्ता : उसके लिए पात्रता होने पर ही गिफ्ट मिले न?

दादाश्री : हाँ, बाकी और मेरी बिसात नहीं है यह। यह वाणी की क्वॉलिटि (गुणवत्ता) बहुत हाई (उच्च) है, यह वेल्डिंग (जोड़) अलग तरह का है।

प्रश्नकर्ता : सब समझ पाए ऐसा और सादी सरल भाषा में।

दादाश्री : हाँ, सादी भाषा में। पर उस भाषा पर हमारा काबू नहीं है, भाषा पर आधारित नहीं है। वेल्डिंग बहुत उच्च कक्षा का और यह हृदयस्पर्शी वाणी। एक ही शब्द से तो सामनेवाले मनुष्य के अनेकों रोग निकल जाएँ, ऐसे ये वेल्डिंग हैं हमारे।

'भगवान' 'हमारे' वश में

प्रश्नकर्ता : आपकी निखालिस वाणी और निखालिस हास्य का रहस्य क्या है?

दादाश्री : भगवान मेरे वश हो गए हैं। सारे चौदह लोक के नाथ, सारा जगत जिसे मानता है, वह भगवान मेरे वश में आ गए हैं।

हम स्वतंत्र सुख भुगत रहे हैं। मेरा मालिक वर्ल्ड (जगत) में कोई है नहीं और जो भगवान है वे तो मेरे वश में आ गए हैं। क्यों वश हो गए हैं? मेरी गरज़ से या उनकी गरज़ से? उनकी गरज़ से मेरे वश में आते हैं। 'वे मालिक हैं, वे अच्छे हैं,' मैं तो ऐसा ही कहूँ। पर वे अब कहाँ जाए? उनको जो कार्य करना है, वह कार्य कैसे होगा?

प्रश्नकर्ता : उनको क्या कार्य करना है, दादाजी?

दादाश्री : यह जगत के लोगों का जो कल्याण होनेवाला है, उसके लिए जो काम करना है तब फिर उसके लिए वाणी कौन बोलें? ज्ञान कौन दें? उनमें (भगवान में) वाणी नहीं है। (जब कि यहाँ) यह टेपरिकार्डर बोलता रहता है। वाणी कैसी चाहिए? बिना मालिकानापन की वाणी होने पर ही मोक्ष होता है।

टेपरिकार्डर, बिना अहंकार और ममता के

यह वाणी वर्ल्ड को स्वच्छ करेगी क्योंकि यह वाणी मेरी नहीं है, यह वाणी ए. एम. पटेल की नहीं

है। यदि इसे 'मेरी वाणी' कहूँ तो मेरी भ्राँति है। ममता होने पर, 'मेरी वाणी', ऐसा बोले। यह वाणी 'ए. एम. पटेल' की होती तब तो वह ईगोइज़्म कहलाए। 'मैं कैसा बोला' वह ईगोइज़्म है। मेरा ईगोइज़्म चला गया इसलिए अब बोलनेवाला मालिक कौन रहा? टेपरिकार्डर रहा। अहंकार जाने के बाद जो बोला जाता है वह किस आधार पर बोला जाए? यानी यह ऑरिजिनल टेपरिकार्डर बोलता है। जिसका 'मैं' नहीं होता, 'मैं' खलास हो गया हो, वहाँ ऑरिजिनल टेपरिकार्डर है।

हमें अहंकार होता नहीं है। हमें ममता नहीं है। हम में अहंकार और ममता शून्य पर पहुँचे होते हैं। इसलिए मैं कहता हूँ कि यह टेपरिकार्डर बोल रहा है। 'मैं बोला' और यह 'मेरी वाणी' नहीं होने के कारण यह टेपरिकार्डर है और टेपरिकार्डर में अहंकार और ममता दोनों नहीं है, इसलिए प्युअॅर है।

मालिक नहीं किन्तु पड़ोसी रहे

हम यह बातें करते हैं, यह टेपरिकार्डर बजता रहता है (वाणी निकलती है) और मैं समाधिस्थ (आत्म स्वरूप में) हूँ। अट्ठाईस वर्षों से हम आत्मा से बाहर नहीं निकले हैं। इस समय भी हम आत्मा में ही हैं। इस वाणी में मैं नहीं रहता, इस देह में मैं नहीं रहता और इस मन में मैं नहीं रहता हूँ। इन तीनों के पड़ोसी के तौर पर रहता हूँ। तीनों ही के मालिकानापन का किसी तरह का दस्तावेज नहीं है। इन सभी के मालिकानापन के टाईटल्स (सिरनामे) फाड़ दिए हैं।

वीतराग वाणी रूपी धन

इस देह में इतनी शक्ति है कि इस समय (सत्संग करते-करते) रात के तीन बज जाएँ तब भी कोई शिकायत नहीं होती। सत्संग होना चाहिए। सत्संग करनेवाले होने चाहिए तो कोई शिकायत नहीं होगी। मन में ऐसा भी नहीं होता कि अब सो जाएँ। उलटे ज्यादा फ्रेश होते जाएँ। ज्यों-ज्यों सत्संग होता जाए त्यों-त्यों फ्रेश होते जाएँ। पुरे जोश में खिले, क्योंकि अंदर ऐसी भावना है कि किसी भी हाल में लोग यह पाएँ। लोग पाते हैं और फिर अहोभाव का अनुभव करते हैं, बेचारे। आज तक उलझन में था और अब वह उलझन सुलझ गई इसलिए अहोभाव का अनुभव करे न? वर्ना लाख रुपये देंगे तो भी किसी का दु:ख हटता नहीं है, उलटे वह दु:ख ज्यादा उलझन पैदा कर दे। उलझन जाने पर दु:ख जाता है। मतलब, धन तो वीतरागों का ही। उस धन की क़ीमत ज्यादा है न? वीतराग वाणी के रूप में धन देते हैं उससे काम बन जाता है।

कैसी यह बुद्धि की करामात !

एक सज्जन मुझसे आ कर कहते हैं, 'बिना बुद्धि के कोई सिखला नहीं सकता।' मैंने कहा, 'सच बात है, बुद्धिवाले ही सिखला सकें।' तब वह मुझसे कहे, 'तो आप कैसे सिखला सकते हैं?' मैंने कहा, 'यह टेपरिकार्डर सिखलाता है।' क्योंकि जिस दिन बुद्धि थी, उस दिन यह टेपरिकार्डर तैयार हुआ था। अब हमारी बुद्धि चली गई इसलिए अब वह टेपरिकार्डर आज काम कर रहा है, और यह तो बुद्धिजन्य ज्ञान है, जो इस टेपरिकार्डर में से निकलता है।

प्रश्नकर्ता : ऐसे ३६० डिग्री का विज्ञान निकल सके, क्या यह बुद्धि उतनी टोप पर गई थी उन दिनों?

दादाश्री : नहीं जाती।

प्रश्नकर्ता : तो फिर?

दादाश्री : ३५६ डिग्री पर है, इसलिए चार डिग्री मेरा कम है।

प्रश्नकर्ता : आपने कहा था कि ऐसा कोई निमित्त आ मिला तो इस डिग्री (३६० डिग्री) की बात भी निकल जाएगी, मेरी वाणी ऊँची निकलेगी।

दादाश्री : हाँ, सारी बातें निकलेगी यानी अमुक को छोड़कर अन्य सभी जानकारी निकालेंगे। 'मैं बोलता हूँ', ऐसा जब तक है, तब तक वह बुद्धि में ही है।

प्रश्नकर्ता : यह टेप इस समय निकलता है वह पिछली बुद्धि के आधार पर है?

दादाश्री : हाँ, उन दिनों टेप हुआ था।

प्रश्नकर्ता : तब क्या इस समय यह टेप इतना हाई लेवल का बोल सकता है?

दादाश्री : वह तो उतना हाई लेवल का टेप होकर ही आया है।

प्रश्नकर्ता : तो क्या उन दिनों बुद्धि उतनी हाई लेवल पर गई थी?

दादाश्री : हाँ, गई थी न! गई थी इसलिए तो यह टेप ऐसा निकला, वर्ना ज्ञान में कैसे आ सकें?

हमारा एक भी वाक्य विशेषभाववाला नहीं होता है। कुदरती रूप से ही निकलता रहे। क्योंकि हमारा 'रिकार्ड' (टेपरिकार्डर) है न! आपकी वाणी 'रिकार्ड' हो जाए फिर हरकत नहीं। 'रिकार्ड' हो गई मतलब बात पूरी हुई। (वाणी बिना मालिकानापन के रिकार्ड के स्वरूप में निकले तो बात पूरी हो जाती है।)

प्रत्येक शब्द के सारे प्रमाण जुटाए, वह ज्ञानी

यदि ज्ञानीपुरुष बोलते हैं वह टेपरिकार्डर है, तो क्या अन्य खुद बोले? ज्ञानी के उदाहरण से हम समझ नहीं जाएँ? यानी यह सारी गहन बातें हैं। ऐसी बातें शास्त्रों में भी नहीं होती, पुराणों में नहीं होती, वेदांत में नहीं कहा, इन सभी का रहस्य ज्ञानी जानें।

कुछ लोग मुझसे कहते हैं कि, 'आप इस वाणी को टेपरिकार्डर कहते हैं इसलिए बड़ी जिम्मेदारी लेते हैं।' मैंने कहा, 'जिम्मेदारी नहीं पर इग्ज़ैक्ट बोल रहा हूँ।' जिम्मेदारी तो कोई मनुष्य लेगा ही कैसे? मुझसे कहते हैं कि, 'यह टेपरिकार्डर है ऐसा मत कहिये, ऐसी बात बताना बंद रखिये। नहीं बोलें तो अच्छा।' मैंने कहा, 'आज तक हकीक़त जो है, वह बात बाहर ही नहीं आई, और नहीं आई इसलिए तो यह बता रहा हूँ और रौब से कहता हूँ आइये मेरे साथ रहिये, छः महिनों में यह बात प्रमाणित कर दूँगा। जो बोलें हैं उसका प्रमाण तो जुटाना पडे न? और मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि, 'यह जो कुछ अट्ठाईस वर्षों से बोला गया है (ज्ञान प्रकट होने के बाद) उसके एक-एक शब्द का प्रूफ (प्रमाण) देने को मैं तैयार हूँ, एट एनी टाइम (किसी भी समय)।' क्योंकि यह वॉटरप्रूफ या फायरप्रूफ ही नहीं है, यह तो ऑलप्रूफ है।

टेप की भूल मिले, देखनेवाले को

प्रश्नकर्ता : क्या ऑरिजिनल टेपरिकार्डर में भूल होती है?

दादाश्री : हाँ, कभी भूल हो सकती है मगर उसे देखना। अब हमारा क्या गुनाह होता होगा? किसी प्रकार से हमारा गुनाह नहीं हो सकता, क्योंकि मैं इस शरीर में रहता ही नहीं हूँ। इस शरीर में अट्ठाईस साल से फर्स्ट नेबरर (पहले पड़ोसी) के तौर पर रहता हूँ, तो फिर हमारा गुनाह कहाँ पर आया? फिर भी इस 'पटेल' के गुनाह हैं। यह 'ए.एम.पटेल' ३५६ डिग्री पर हैं और भगवान स्वयं ३६० डिग्री पर हैं। 'ए. एम. पटेल' की चार डिग्री कम है इसलिए कुछ भूल होना संभव है। ऑरिजिनल टेपरिकार्डर चार डिग्री की कमीवाला है इसलिए मुझे देखते रहना पड़े। 'देखनेवाला' जो है वह पूरी डिग्री से देखता है इसलिए वह भूलचूक सुधार दे। 'उसकी' भूलें मिट जाने पर कम्पलीट (पूर्ण) हो जाएगा।

इस समय यह जो बोला जाता है उसकी जिम्मेदारी मेरी नहीं है, क्योंकि मैं इसमें अलग हूँ। यह रिकार्ड बोल रहा है, इसलिए जिम्मेदारी नहीं रहती। लेकिन यदि भूल हुई तो हम तुरंत उसे नोट करते हैं (उस पर ध्यान देते हैं)। लोगों के पास

भूलवाली वाणी नहीं बोलनी है। वाणी एकदम क्लिअर होनी चाहिए, बिलकुल भूल बगैर की होनी चाहिए, एक सेन्ट तक भूल नहीं होनी चाहिए। एक सेन्ट भी भूल रही तो लाखों मनुष्यों का नुकसान हो जाए। सारे दिन में शायद एकाध भूल निकले, फिर भी हम नोट करते हैं। भूल तो होनी ही नहीं चाहिए। भूल मिटानी ही होगी। इस पुद्गल की भूल भी मिटानी होगी। आत्मा में तो भूल है ही नहीं। किसकी भूल मिटानी है?

प्रश्नकर्ता : पुद्गल की।

दादाश्री : हाँ। पुद्गल किसका? हमारा खड़ा किया हुआ। भले ही इस समय हम उसके मालिक नहीं हों मगर किसने खड़ा किया? जिम्मेदारी किसकी? हु इज़ रिस्पोन्सिबल?

प्रश्नकर्ता : हम स्वयं ही।

दादाश्री : हाँ, इसलिए अब हमारी एक भी भूल रहनी नहीं चाहिए। उन भूलों में किसी मनुष्य या अन्य किसीको दु:ख पहुँचाने की क्रिया ही नहीं होती। केवल इतना कि वाणी ज़रा कड़ी निकले और सुननेवाले को लगे, तो वह भूल कहलाए। वाणी ज़रा-सी भी लगनी(घाव करनी) नहीं चाहिए, सही बात होने पर भी लगनी नहीं चाहिए। एक अक्षर भी उलटा नहीं बोल सकते। एक अक्षर तो क्या से क्या कर डाले। यानी किसीको दु:ख हो ऐसी वाणी निकलने पर मुझे तुरंत ही पता चल जाए कि यह टेपरिकार्डर कैसा बना है? इसमें दोष किसका? फिर जो दोषी हो उसे कह दूँ कि, 'आप क्षमा माँग लें, आपने ऐसा क्यों किया? आपने भूल की है।' यानी माफ़ी मँगवा लूँ। किसीको दु:ख पहुँचाने हेतु यह टेपरिकार्डर नहीं है, सुख पहुँचाने के लिए है।

बोलते समय भी शुद्ध उपयोग

वाणी किसकी अच्छी निकले? उसकी जो उपयोगपूर्वक (आत्म स्वरूप में रहकर) बोलता हो। अब उपयोगवाला कौन होता है? ज्ञानी होते हैं। ज्ञानी के अलावा दूसरा कोई उपयोगवाला नहीं होता है।

यह हम जो बोलते हैं वह उपयोगपूर्वक बोलते हैं। यह रिकार्ड बोले, उसके ऊपर हमारा उपयोग रहता है कि क्या-क्या भूल है और क्या नहीं? स्यादवाद में जो कुछ भूल हो उसे हम देखा करें और यह जो बोलते हैं वह रिकार्ड है। लोगों के भी रिकार्ड ही बोलता है लेकिन उनके मन में होता है कि 'मैं बोला'। आपके साथ बातें करते-करते भी हम निरंतर शुद्धात्मा के उपयोग में रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : दो लक्ष्य होते हैं?

दादाश्री : नहीं, दो लक्ष्य नहीं होते हैं, लक्ष्य एक ही होता है। बातें करना, उसमें मुझे कुछ करना नहीं होता। हम तो बातों में क्या हो रहा है वही देखा करें। हम एक घड़ीभर के लिए भी, एक मिनट भी उपयोग के बाहर नहीं होते। आत्मा का उपयोग होता ही है।

अविरत ज्ञाता-द्रष्टा

किसी समय (आत्म स्वरूप में से) बाहर निकलकर अंबालाल के साथ भी एकरस होता हूँ। दोनों ओर व्यवहार होने देना चाहिए। यह इस समय (आपके साथ बात करते समय) व्यवहार में आया कहलाए। वर्ना अंदर खुद अभेद रहे।

प्रश्नकर्ता : आपको द्रष्टाभाव की स्थिति सदैव रहती है क्या?

दादाश्री : ज्ञाता-दष्टा स्थिति सदैव रहे। यह टेपरिकार्डर बात करता रहे और अंदर शुद्ध उपयोग रहे। यह क्या बोले और क्या नहीं इतना ही देखा करें। यह बात भी चलती हो और शुद्ध उपयोग भी रहे।

प्रश्नकर्ता : ज्ञाता-द्रष्टा भाव के साथ परमानंद भाव भी होता है न?

दादाश्री : परमानंद ही होता है, निरंतर परमानंद। यानी निरंतर जुदा रहने का ही व्यवहार है। हम एक सेकिन्ड के लिए भी पुद्गल भाग में रहते नहीं हैं। मैं तो क्षेत्रज्ञ के रूप में देखता रहता हूँ। 'मैं' अपने क्षेत्र में ही रहता हूँ।

प्रश्नकर्ता : हम आप से प्रश्नोत्तर करें तब आप किस में होते हैं?

दादाश्री : हम उसके ज्ञाता-द्रष्टा रहें वही हमारा उपयोग। ये शब्द निकलते हैं वह टेपरिकार्डर बोलता है उसमें हमें कोई लेना-देना नहीं है। उस पर उपयोग रहे इसलिए हमें पता चल जाए कि कहाँ पर भूल हुई और कहाँ पर उपयोग नहीं रह पाता। आप जब कोई रिकार्ड सुन रहे हों तो आपको कैसा स्पष्ट समझ में आए कि इसमें यह भूल है और यह 'करैक्ट' है? वैसे ही हमें हमारा वाणी का रिकार्ड बज रहा हो तब हमें पता चल जाता है।

पहला दर्शन, बाद में टेपिंग

प्रश्नकर्ता : आपके अंदर जो दर्शन खुल गया है, तब जब आपका टेप निकलता है, उस समय उस टेप को इग्ज़ैक्ट निकलने में वह दर्शन कुछ काम करता होगा न?

दादाश्री : उस दर्शन के आधार पर टेप होता है। यानी पहला दर्शन और बाद में टेप। वर्ना टेप ही ज्ञानी कहलाए। तब तो मुझे ही टेप के पास से सुनना पड़े न?

प्रश्नकर्ता : यह तो सहज ही निकले न?

दादाश्री : हाँ, सहज, सहज।

प्रश्नकर्ता : क्या सहज ही निकले? उसमें कुछ करना नहीं पड़ता?

दादाश्री : उसीका नाम टेप! उसे मैं खुद देखकर बोलता हूँ। पढ़ा हुआ नहीं बोलता। खुद इन आखों से नहीं देखता, लेकिन अंदर जो दर्शन खड़ा हुआ है उसके आधार पर बोलता हूँ।

अनुभवसिद्ध वाणी यह

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं, 'मैं देखकर कहता हूँ' इसे ज़रा विस्तार से समझाइये न?

दादाश्री : उसमें क्या विस्तार? यदि बुद्धिजन्य होता तो विस्तार से कहा जाए। यह दृश्य आँख का नहीं है ऐसा कहा न! आँख का होने पर, इन्द्रियों का होने पर सब विस्तार से समझ में आए। इसमें विस्तार से नहीं होता। आप उस जगह पर आएँगे तब आपको दिखाई देगा इसलिए हमें(आपको) उस जगह पर पहुँचने की दृष्टि रखनी है। पाँच आज्ञाओं का पालन करेंगे तो उस जगह पर आएँगे, यह निर्विवाद है।

मैं पहाड़ की चोटी पर जाकर बातें करता हूँ कि मुझे ऐसा दिखाई देता है! हाँ, अन्य सभी जो चढ़ते-चढ़ते बोले हैं उसमें भूलें मिलेंगी और हम पहाड़ चढ़कर बोलते हैं, उसमें कोई भूल नहीं निकलेगी और आपका काम हो जाएगा। हम कहें कि इस ओर ऐसे घूमो, इधर से उधर घूमो तो भी आप पाँच मिनट में यहाँ आ जाएँगे और उधर (क्रमिक में) पचास लाख मील होंगे तब भी दिन नहीं बदलेगा क्योंकि खुद बीच रास्ते में है।

जो कह गए हैं वे जान नहीं सके और जो जान सकें हैं वे कह नहीं सकें हैं। मैं अकेला, कह सकता हूँ और जान सकता हूँ।

ज्ञानी के जवाब निकलें सहज

लोग बोलते हैं, वे नीचे रहकर ऊपर की बात करते हैं, और हम ऊपर रहकर ऊपर की बात करते हैं। हमारा एक भी शब्द फेरफारवाला नहीं होता। हमारे शब्द सारे शास्त्र लिखनेलायक होते हैं। फिर से नये शास्त्र लिखना चाहें तो लिख सकें। हम जो देखते हैं वही बोलते हैं।

कुछ लोग रात-दिन मेरे साथ रहते थे, मैंने उनको साथ में रहने की छूट दे रखी थी। तब उनमें से कोई सत्रह दिन रहा, कोई दस दिन रहा। जो

सत्रह दिन रहा था उसने मुझसे पूछा कि, 'दादाजी, मैं आपके साथ सत्रह-सत्रह दिनों से रह रहा हूँ और रोज़ाना पूछता रहता हूँ। मैं आपको रोज़ के पाँच सौ, पाँच सौ प्रश्न पूछता हूँ, उन सभी प्रश्नों के आप कैसे उत्तर दे पाते हैं? इनमें से पाँच के जवाब भी कोई नहीं दे सकता।' तब मैंने कहा, 'आप मुझसे पूछा करते हैं पर मैं तो देखकर जवाब देता हूँ। आपको पूछने में मेहनत होती होगी क्योंकि प्रश्न बनाने पड़ते हैं।' इस पर वह कहे, 'अब तो पूछने जैसा भी कुछ नहीं रहा है।'

रिकार्ड के ज्ञाता सदा

यह रिकार्ड बोल रहा है उसे मैं देखा करता हूँ कि, 'क्या रिकार्ड बज रहा है और क्या नहीं?' और जगत के लोग तन्मयाकार हो जाते हैं। संपूर्ण निर्तन्मयाकार रहना उसे कैवल्यज्ञान कहा है।

हमें कोई गालियाँ दे तो वह हमारे ज्ञान में ही होता है, 'यह रिकार्ड क्या बोल रहा है' वह भी ज्ञान में ही होता है। रिकार्ड झूठ बोल रहा हो, वह भी हमारे ज्ञान में ही होता है। हमें सारी जागृति रहा करे और संपूर्ण जागृति वह कैवल्यज्ञान है। व्यवहार में लोगों को जो व्यवहारिक जागृति रहती है वह तो मारे अहंकार के रहती है लेकिन यह तो शुद्धात्मा होने के बाद की जागृति कहलाए। यह आंशिक कैवल्यज्ञान की जागृति है और इसलिए कल्याणकारी है।

अंदर की मशीनरी को हमें ढीला नहीं छोड़ना है। उसके ऊपर नज़र रखनी है कि कहाँ-कहाँ घिसाई होती है, क्या हो रहा है? किसके साथ वाणी कड़ी निकली? बोले उसमें हरकत नहीं है पर हमें 'देखा' करना है कि, 'अहह! चंदुभाई कड़क बोले।'

प्रश्नकर्ता : लेकिन जब तक ऐसा नहीं बोला जाए तब तक अच्छा है न?

दादाश्री : बोलना या नहीं बोलना अब हमारे हाथों में नहीं रहा।

बाहर का तो आप देखा करें वह अलग बात है लेकिन आपके भीतर ही जब आप सब देखा करेंगे तब आप कैवल्यज्ञान सत्ता में होंगे। लेकिन अंश कैवल्यज्ञान होता है, सर्वांश नहीं। अंदर बुरे विचार आएँ उन्हें देखना और अच्छे विचार आएँ उन्हें भी देखना। बुरे विचारों के लिए द्वेष नहीं है और अच्छे विचारों के ऊपर राग नहीं है। क्योंकि मूलत: सत्ता पर ही हमारा काबू नहीं है।

वाणी बोलते समय जुदापन

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं कि 'हमारे बाहर अलग और अंदर अलग' ऐसे दो काम एट ए टाइम चलते रहते हैं, तो यह सारी बातचीत और ये सारे व्यवहार में अंदर अलग कैसे रखा जाए?

दादाश्री : बात करते समय नहीं। बात करते समय नहीं हो सके। कार्य करते समय होता है। वाणी में नहीं रहा जाए। यों साधारण ख्याल रहे लेकिन ऐसा रह नहीं सके।

प्रश्नकर्ता : तो क्या केवल दैहिक क्रिया में ही अलग रहा जाए?

दादाश्री : हाँ, देह की क्रिया में तो सभी अज्ञानीओं को भी दो काम होते हैं। यहाँ खा रहा हो और वहाँ ऑफिस के विचार करता हो। संडास गया हो और अन्य विचार में हो। यानी हरकोई दो काम कर सकता है, अज्ञानी भी कर सके न?

प्रश्नकर्ता : जैसे देह की क्रिया में अलग रह सके तो मानसिक विचारणा में दो जुदा रह सके?

दादाश्री : मन की क्रिया में भी जुदा रह सके। वह तो रहता ही है न?

प्रश्नकर्ता : वह कैसे?

दादाश्री : 'मन क्या सोचता है' यह सब दिखाई दे न? अज्ञानी को भी दिखाई दे।

प्रश्नकर्ता : मगर अलग रहने का क्या?

दादाश्री : मतलब अलग ही रहे। बिलकुल अलग रहे तब देख सके। वर्ना अलग नहीं रहे तो देख नहीं सके।

प्रश्नकर्ता : फिर वाणी में अलग क्यों नहीं रहता?

दादाश्री : वाणी में अलग नहीं रहे। हमें तो 'हम' 'टेपरिकार्डर' जानते हैं, उसकी बात अलग है। लेकिन दूसरों से तो कुछ नहीं हो सकता।

स्व के साथ ज्ञानी भेद-अभेद भाव से

जब हम बात करें तब हम बात में नहीं होते, बात से परे होते हैं। यदि बात में होते तो दूसरे मिनट ही बदल जाएँ लेकिन हम बदलते नहीं हैं।

'हम' मतलब यह बाह्य दिखाई देते हैं, वह 'हम' नहीं हैं। यह दिखाई देते हैं उसके 'हम' मालिक नहीं हैं। टाइटल भी हमारे पास नहीं है। मन के, वाणी के, देह के मालिक 'हम' नहीं है। जब 'हम' कहते हैं तब 'दादा भगवान' की बात करते हैं। हम अमुक स्टेज में होते हैं तब 'दादा भगवान' और अमुक स्टेज में होते हैं तब 'ज्ञानी' होते हैं। प्रश्नों का खुलासा देते हैं वे 'ज्ञानी'। यानी सत्संग की बातें चलती हैं तब मुझे 'ज्ञानी' के तौर पर रहना पड़ता है और अन्यथा अभेदभाव से रह सकता हूँ। मतलब मैं भेदभाव से और अभेदभाव से दोनों तरिके से रह सकता हूँ। जब कि संपूर्ण वीतराग तो अभिन्न भाव से ही रहा करते थे। हम में इतना कच्चापन है कि इतना भेदभाव रहता है।

प्रश्नकर्ता : वह अलौकिक दर्शन सब लोगों की हाज़िरी हो तब तक रहे कि बाद में फेरफार हो जाए?

दादाश्री : व्यक्तिगत वाणी निकले तब वह टूट जाए और सत्संग करें तब भी टूट जाए, क्योंकि उस समय इसमें (रिकार्ड में) ध्यान देना पड़े। यह रिकार्ड चल रहा हो उसमें सब देखना पड़े कि रिकार्ड में क्या चल रहा है और क्या नहीं! कभी कोई भूल हो तो उसका प्रतिक्रमण करना पड़े।

याददाश्त से नहीं, किन्तु विज़न में देखकर

लोग हमसे पूछते हैं कि, 'आपको यह सब खबर कैसे होती है?' तो हम कहें कि हमें दिखाई दे।' जब आप कहें कि हम उन दिनों में जात्रा में गए थे और ऐसा हुआ था, वह बराबर कि नहीं? तब मैं कहूँ कि बराबर है। लेकिन हम, देखा गया हो वह बताएँ, और आप याददाश्त के आधार पर बताएँ। बोलते ही, वैसा दिखाई दे, 'जैसा है वैसा' इग्ज़ैक्टनेस में दिखाई दे।

प्रश्नकर्ता : दर्शन में आए सब?

दादाश्री : दिखाई दे। दर्शन में नहीं। यों इग्ज़ैक्ट दिखाई दे।

प्रश्नकर्ता : वह दर्शन में किसके द्वारा दिखाई दे? चित्त के?

दादाश्री : स्पष्ट क्लियर हुआ दिखाई दे। पूरा का पूरा ट्रान्सपरन्ट (पारदर्शक) है। सारा बिलकुल प्युअॅर।

प्रश्नकर्ता : क्या उस पर उपयोग देना पड़ता है?

दादाश्री : सहज ही दिखाई दे। उपयोग देनेवाला कौन? उपयोग देनेवाला वह अलग होता है।

प्रश्नकर्ता : आपने कहा कि, 'इसके पीछे अलौकिक मेहर है।'

दादाश्री : हाँ, अलौकिक मेहर है। मगर वह शब्द अच्छा है। उस वक्त वह शब्द निकल गया वर्ना मैं कहाँ खोजने जाता? मैं कहाँ डायरियाँ देखने जाऊँ इनकी? उस वक्त अपने आप निकला इसलिए इसके पीछे कोई संकेत है न? आयोजन है न कि नहीं है?

प्रश्नकर्ता : यह आयोजित नहीं, साहजिक है।

दादाश्री : हाँ, वर्ना हरकोई गर्वरस खाने के लिए बोले, 'मैं बोला, कितना सुंदर बोला?' ऐसा कहने पर अंदर पॉइज़न पड़ा समझो। फिर उनसे कल्याण नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : और आपने आश्चर्य व्यक्त किया कि यह नया शब्द कहाँ से निकला?

दादाश्री : हाँ, यह तो टेप में से निकलता रहता है। हम कहें कि अब आप सुनवाइये, तो ऐसा हो नहीं सकता। उसके लिए योग जमना चाहिए।

प्रश्न अज्ञान के, उत्तर टेपरिकार्डर के

जिसे अज्ञानरूपी अंधेरा है वह प्रश्न खड़ा करता है और जवाब सहज वाणी का है। अरे, मैं ही खुश हो गया कि कितना सुंदर जवाब है यह!

प्रश्नकर्ता : क्या दादाजी को मालूम नहीं था कि ऐसा (जवाब) आनेवाला है?

दादाश्री : नहीं, मुझे मालूम नहीं था। टेपरिकार्डर बजने पर मुझे मालूम हुआ कि सुंदर जवाब है।

सही-गलत दोनों टेप के प्रति, ज्ञानी निर्लेप

प्रश्नकर्ता : आप बड़े सुंदर दृष्टांत देते हैं।

दादाश्री : मैंने नहीं दिए। यह टेपरिकार्डर देता है। यह इनाम मुझे मत देना। यह टेपरिकार्डर बोलता है। मैं भी खुश हो जाता हूँ कि 'अहह! आज तो टेपरिकार्डर सुंदर बजा।'

प्रश्नकर्ता : इस टेप में अजायब भरा है।

दादाश्री : लेकिन ऐसा निकलने पर लोग मुझे प्रेज़ेन्ट (उपहार) देते हैं। यह जवाब अंबालालभाई नहीं देते हैं, यह टेपरिकार्डर देता है। हम इसके लिए गर्व नहीं लेते कि 'मैं कैसा सुंदर बोला' और ऐसा-वैसा। क्योंकि वाणी मेरी नहीं है, फिर मुझसे बोला ही कैसे जाए? इसलिए रिकार्ड अच्छा बजे तब भी मैं उसका मालिक नहीं होता हूँ। और यह रिकार्ड तो लोग तारीफ़ करे ऐसा ही होगा न? पर हम उसके मालिक नहीं होते, मालिक होने पर पॉइज़न हो जाए। हम तो उसकी जिम्मेदारी ही नहीं लेते।

कईबार तो इस टेपरिकार्डर को सुनकर मैं भी खुश हो जाऊँ और कुछ दूसरा सुनकर भी हम नाखुश नहीं होते और आप सब नाखुश हो जाएँ। यानी यों तो आप नाखुश नहीं होते हैं पर ज़रा कच्चा पड़ जाता है, फिर सुधार लेते हैं। यानी सुनते समय पहले कच्चा पड़ जाए, तब कहें कि, 'दादाजी, ऐसा क्यों बोले?' इसलिए हमें कहना पड़ा कि यह टेपरिकार्डर बोलता है।

यह टेपरिकार्डर कुछ किए बगैर ही निकला करता है और हम तो यह टेपरिकार्डर क्या बोलता है इसे देखा करें और जाना करें, बस। खराब बोला जाए उसे भी जानें और अच्छा बोला जाए उसे भी हम जानें। दोनों के जानकार हम। उसमें खरे-खोटे की भी फिर जिम्मेदारी नहीं क्योंकि टेपरिकार्डर बोलता है 'मैं' तो जानकार हूँ। 'मैं' तो जुदा हूँ।

हमें अच्छी वाणी से भी लेना-देना नहीं है और खराब वाणी से भी लेना-देना नहीं है। वाणी अच्छी निकले तब भी मेरी नहीं और खराब निकले तब भी मेरी नहीं। हम तो अच्छी होने पर भी 'मेरी' नहीं कहते और खराब होने पर भी 'मेरी' नहीं कहते। जो निकली वह सही, करैक्ट। उसका मालिकानापन नहीं। सही जवाब रहा या भूलवाला रहा, मगर टेपरिकार्डर का। तारीफ़ होती हो या बुराई होती हो, दोनों ही ऑरिजिनल टेपरिकार्डर के। इसलिए आप यश दें तो उसकी हमें ज़रूरत नहीं है क्योंकि यह टेपरिकार्डर बोलता है उसमें हमारा क्या लेना-देना? और अपयश दें तो भी हमें लेना-देना नहीं है।

सहज जवाब से ही समाधान

प्रश्नकर्ता : आपके सहज जवाब पा कर समाधान हो जाता है।

दादाश्री : सहज जवाब होने पर समाधान हो जाए। यह सहज जवाब है इसलिए स्थिर हो जाए। लोगों के बड़े-बड़े प्रश्न सोल्व हो गए हैं। चाहे कैसे भी उलझे हुए हों मगर सोल्व हो जाएँ, क्योंकि सहज जवाब है।

प्रश्नकर्ता : आपको प्रश्न किया जाए कि तुरंत एकदम से इग्ज़ैक्ट जवाब कैसे आ जाता है?

दादाश्री : वही ज्ञान कहलाए। वह ज्ञान की भूमिका है। पूछनेवाला प्रश्न करे और यहाँ कैवल्यज्ञान में से उसका जवाब मिल जाए।

प्रश्नकर्ता : यानी अंदर ऐसा क्या होता होगा कि इग्ज़ैक्ट जवाब निकले?

दादाश्री : कुछ नहीं होता है। वह सहज प्रक्रिया है। मुझे कुछ करना नहीं होता, विचार नहीं करना होता। सहजवाणी कुछ किए बगैर ही निकले। और वह भी शास्त्र में लिखने योग्य होती है और वह शास्त्र, एक शब्द काटा नहीं जाए ऐसा होता है।

मतलब ये मेरे सोचे हुए जवाब नहीं हैं। वे तो टेपरिकार्डर से निकले हुए जवाब हैं। मेरे पास से जो निकला वह तो टेपरिकार्डर के ज़रिये ही निकले न? मैं कहाँ बोलता हूँ? यह मन से विचार की गई बात नहीं है। यह सहज वाणी है।

प्रयत्न से ही बिगड़ता है, फिर भी सभी लोग प्रयत्न करेंगे। यह मैं टेपरिकार्डर किसलिए कहता हूँ? साहजिक वस्तु है। उसमें मैं हस्तक्षेप नहीं करता इसलिए निकलती है। इसलिए यहाँ बिना भूल के ग्यारह सौ टेप भरे गए हैं और आपको एक टेप भरना हो तो उलटा-सीधा करके लाएँगे। क्योंकि साहजिकता है नहीं, साहजिकता आनी चाहिए न?

सहजवाणी ऐसे पहचानी जाए

प्रश्नकर्ता : वाणी सहज कब होती है?

दादाश्री : 'यह टेपरिकार्डर बोलता है' ऐसा होने पर वाणी सहज होती है।

प्रश्नकर्ता : आपकी तो सहजवाणी कहलाए न?

दादाश्री : सहज वस्तु यानी, सिर्फ 'बोलना' वह सहज नहीं कहलाता। कोई कहेगा, 'मैं बोला', वह सहज नहीं कहलाए।

प्रश्नकर्ता : मगर यह तो ऑरिजिनल टेपरिकार्डर है न?

दादाश्री : हाँ, मगर जो यह नहीं जानता वह कहेगा 'मैं बोला'। वह सहज नहीं कहलाए, असहज हुआ कहलाए।

प्रश्नकर्ता : बोला गया मतलब सहज?

दादाश्री : बोला गया, लेकिन सहज यानी साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडन्स, अपने आप तरतीब (क्रम) से रखा गया हो ऐसे बाहर निकला करे। इसलिए टेपरिकार्डर कहता हूँ न? क्या आपको लगता है, शत-प्रतिशत विश्वास है कि यह टेपरिकार्डर है?

प्रश्नकर्ता : लेकिन है बड़ा मुश्किल।

दादाश्री : हाँ, ऐसा अनुभव करना आपके लिए बहुत मुश्किल हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : वह तो आपकी सहजवाणी निकलती है।

दादाश्री : निकलती है, और उसे देखने पर हमें आ जाए। एक मनुष्य मुझसे कहता है, 'यह सब काम मुझे नहीं अनुकूल आनेवाला।' मैंने पूछा, 'यह सब काम करने में तुझे क्या आपत्ति है? क्यों देर लगती है?' तब कहे, 'मुझे सूझ नहीं पड़ती, एकबार आप करके दिखलाइये।' मैंने कहा, 'मैं करके दिखलाऊँगा तो क्या तुझे तुरंत आने लगेगा?' वह कहे, 'हाँ, एकबार करके दिखलाइये।' यानी कोई कर दिखलाए तो वैसे करने लगे। इसलिए यह मैं बोलता हूँ न, वह कर दिखलाता हूँ ताकि आप धीरे-

धीरे ऐसा करने लगें। एकदम से दूसरे ही दिन नहीं हो पाए, लेकिन आपके अंदर उसका आयोजन हो जाए ऐसा।

प्रश्नकर्ता : हम उस दिन की प्रतीक्षा में हैं।

दादाश्री : किसी भी वस्तु की प्रतीक्षा करें उस समय थकान होती है। हम किसलिए प्रतीक्षा करें? बल्कि वह दिन हमारी प्रतीक्षा करें! मैं तो ऐसा था कि वह हरएक वस्तु खुद मेरी प्रतीक्षा में हो और हम सम्मान के साथ वहाँ पर जाएँ।

हम सहज हैं इसलिए हमारी हरएक क्रिया सहज होती है, उसमें कर्त्तापन नहीं होता। इसलिए सहज के साथ जब से बैठना शुरू किया तब से सहज होते जाएँ। और अहंकारी के पास बैठने पर, न होने पर भी अहंकार खड़ा हो जाए।

ये वाणी के साहजिक शब्द हैं, वे यदि डिक्शनरी में नहीं हो तो वह डिक्शनरी ही गलत है। ज्ञानीपुरुष के शब्द साहजिक होते हैं, (यदि वे डिक्शनरी में नहीं रहे तो,) वह डिक्शनरी की भूल कहलाए लेकिन ज्ञानीपुरुष की भूल कैसे कहलाए उसे?

प्रश्नकर्ता : एक आदमीने आप जैसा कहते हैं वैसा ही मतलब निकाला था कि, 'आपकी वाणी साहजिक है' ऐसी दादाजी की बात सही थी।

दादाश्री : यानी कल्पित वाणी और साहजिक वाणी में बड़ा अंतर है। साहजिक वाणी मतलब निरालंब वाणी कहलाए। कवियों की वाणी निकले न? वह निरालंब वाणी कहलाए। कुछ साहित्यकारों की भी निरालंब वाणी होती है मगर वह सांसारिक होती है। और यह ज्ञानीयों की भाषा तो निरालंब ही होती है, क्योंकि वे उसके मालिक ही नहीं हैं, तो फिर वह वाणी गलत कैसे निकल सके? मालिक रहा तो वह गलत निकालेगा, मालिक नहीं है तो गलत कैसे निकल सके? इसलिए (यदि डिक्शनरी में नहीं मिले तो), फिर डिक्शनरी बदलनी चाहिए! यहाँ पर लाल बुझक्कड़ बनने जाए तो फिर हाथ जल जाए। लेकिन जगत को 'ऑडिट' (लेखा-परीक्षा) करने का अधिकार है न?

सहज निकले हुए क्रियाकारी शब्द

प्रश्नकर्ता : आपके जो शब्द हैं सारे, फाइल, पॅज़ल, रिअल, रिलेटिव, रोंग बिलिफ आदि जो शब्द हैं सारे वे ही सारा दिन क्रियाकारी होते रहते हैं। वह शब्द प्रयोग में आया कि शांति हो जाए।

दादाश्री : हाँ, क्योंकि सहज स्वभाव से निकले हुए शब्द हैं न!

हाँ, देखिये न, यह शब्द कैसा निकला, 'पावर चेतन'। वह कहाँ से निकला? पर वही एप्रोप्रियेट (यथायोग्य) शब्द है। लोग तो ऐसा ही जानें कि यही चेतन है। मगर वह तो पावर चेतन है। बैटरी के सेल में पावर होता है इसलिए क्या वह जीवित वस्तु है? वह तो पावर भरा गया है इसलिए उजाला देता है और पावर खतम हुआ कि फिर कोई उजाला ही नहीं होता। वैसे यह सब भी पावर भरी हुई बैटरियाँ हैं।

कुदरती ही निकले ये अंग्रेजी शब्द

बड़े-बड़े पढ़े-लिखे लोग मुझसे पूछते हैं कि 'दादाजी, हम इतने बड़े स्नातक हुए हैं लेकिन अभी साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडन्स शब्द ठीक से बोलना हमें नहीं आता है। आप कैसे बोल पाते हैं? आप कहाँ तक पढ़े हैं?' मैं कहता, 'मैट्रिक फेइल।' वे कहते, 'यह तो हमारे लिए दाँतों तले उँगली दबाने जैसा लगता है।' मगर यह तो अपने आप कुदरती निकल जाता है।

यह जो मेरे मुँह से अंग्रेजी शब्द निकल गए हैं वे तो कुदरती निकले हैं, मेरी पढ़ाई के कारण नहीं निकले। पढ़ाई में तो मैं मैट्रिक फेइल हूँ, लेकिन यह 'ओन्ली साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडन्स'

और 'द वर्ल्ड इज़ द पॅज़ल इटसेल्फ' आदि सब बोलूँ वह अपने आप कुदरती निकल जाता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन आप जितना भी अंग्रेजी बोलते हैं वह सही होती है।

दादाश्री : हाँ, सही होती है मगर वह कुदरती निकल जाती है।

यह कुदरत का विज्ञान कितना सुंदर है! आगे जा कर लोग साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडन्स का पृथक्करण करेंगे तब समझ पाएँगे कि इसके अलावा तो कोई चीज़ होनेवाली नहीं है, एक पत्ता तक नहीं हिल सके ऐसा है। यह 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडन्स' जो बोला गया है वह बहुत बड़ा वाक्य बोले हैं। जब उसका मतलब समझनेवाले निकलेंगे, तब वह समझ में आएगा।

बिना भूल के वे शब्द

प्रश्नकर्ता : साहित्य की भाषा में तो भूलभुलैयाँ में खो जाएँ। और यह तो सीधे उतर जाता है।

दादाश्री : हाँ, उस भाषा से उलटे उलझन में पड़ जाओ और मेरी वाणी में पारिभाषिक शब्द नहीं होते हैं।

प्रश्नकर्ता : फिर भी मैं यह साबित करने को तैयार हूँ कि हमारी जो आप्तवाणी की पुस्तकें हैं वे साहित्य के किसी भी स्टैन्डर्ड (स्तर) पर खरी उतरेंगी।

दादाश्री : नहीं, लेकिन कुछ अन्य लोग भी होंगे जो ऐसा कहेंगे कि साहित्य उच्च है। साहित्यकारों की वाणी बहुत अलग तरह की होती है क्योंकि उसमें साहित्यकारों का सयानापन होता है और मेरा तो इसमें नाममात्र को भी सयानापन नहीं होता है न! साहित्यकारोंने वाइज़नेस डाली होती है, और इसमें वाइज़नेस नहीं न! जैसा वाणी में निकला वैसे लिख दिया।

प्रश्नकर्ता : सहजभाव से जो निकला हो!

दादाश्री : हाँ, सहजभाव से जो निकला हो वह और इसलिए तो कहता हूँ न, 'टेपरिकार्डर'। मेरी मिल्कियत ही नहीं होती यह सब।

अक्रम विज्ञान, स्थानीय भाषा में

प्रश्नकर्ता : क्या आपको संस्कृत या प्राकृतभाषा अनुकूल आए?

दादाश्री : किसी भाषा पर काबू नहीं, लेकिन यह गुजराती भाषा तो अपने आप प्रकट हो गई। यह रिकार्ड प्रकट हो गया इसलिए। बाकी तो, पढ़ा ही नहीं हूँ न! कुछ आता ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान प्रकट हो गया है, तो अंदर से अपने आप नहीं आ जाए क्या?

दादाश्री : हमें और कुछ नहीं आता। संसार का कुछ आता नहीं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन आपकी गुजराती गद्य की जो शैली है, वह सबसे अलग दिखाई देती है।

दादाश्री : मैं ज्यादा पढ़ा-लिखा नहीं हूँ, लेकिन मेरे नाम खत बहुत आते रहते हैं। 'आपने अपनी स्थानीय भाषा में चौबीस तीर्थंकरों का विज्ञान प्रस्तुत किया है वह अजूबा ही किया है, आपकी स्थानीय भाषा के तो क्या कहने! हमें बहुत आनंद आता है।' हाँ, और हम कुछ सीखे ही नहीं थे! ऐसी लम्बी भाषा सीखे ही नहीं थे और ऐसा हमें आता भी नहीं है। यह देसी भाषा में कैसी सुंदर बात निकलती है, वह भी स्थानीय भाषा में!

थोड़ा-बहुत पसंद आता है क्या?

प्रश्नकर्ता : आनंद हुआ।

दादाश्री : तब अच्छी बात है, आनंद होना चाहिए। मेरी भाषा में शब्द ज़रा स्ट्रोंग (कड़े) होते हैं। भाषा ही ऐसी। बाकी, यों तो नम्र है। हम ठहरे पटेल और फिर क्षत्रिय! इसलिए भाषा ज़रा उसके

मुताबिक होती है।

लेखा-जोखा, चौबीस तीर्थंकरों के ज्ञान का

प्रश्नकर्ता : वीतराग वाणी की पुष्टि करनेवाली बाते हैं सारी।

दादाश्री : हाँ, पुष्टि करें। भगवान की, चौबीस तीर्थंकरों की बात का स्वीकार करके, उससे आगे दूसरा नया शोधन किया है, इस काल के आधार पर जो ज़रूरत है उतना शोधन किया है। सादी भाषा में, हरएक की समझ में आए ऐसा, और फिर भविष्य की चिंता नहीं रहे ऐसा 'व्यवस्थित' का ज्ञान।

हमें चौबीसों तीर्थंकरों का अंदाज़ा है कि यह इनका ज्ञान ऐसा था, उनका ऐसा ज्ञान था, इनका ऐसा था और इसलिए चौबीसों ही तीर्थंकरों के ज्ञान का लेखा-जोखा है यह, एकसाथ। क्योंकि प्रत्येक तीर्थंकर कालानुसार अलग-अलग हुए थे और काल के आधार पर सारी वाणी बोली गई है।

वैज्ञानिक ढब, तीर्थंकरों का

तीर्थंकरों का ढब बहुत ही वैज्ञानिक है। जब मेरा ढब इतना वैज्ञानिक है तो उनका कितना सुंदर होगा। जो अनुत्तीर्ण हुआ है उसका ढब यदि इतना वैज्ञानिक है, तब जो उत्तीर्ण हुए हैं उनका कैसा वैज्ञानिक होगा? आपको क्या लगता है? जब यदि मेरे पास आ कर एक ही घंटे में मनुष्य में इतना सारा फेरफार हो जाता है, तब फिर तीर्थंकर भगवान तो कितने सयाने होंगे? और यह उनकी ही बात है। मेरा इसमें कोई, किसी तरह का माल नहीं है। यह तो टेपरिकार्डर बजता रहता है और मैं सुनता रहता हूँ।

अंतिम स्टेशन की बातें

यहाँ न तो प्रवचन होता है और न ही व्याख्यान होता है। व्याख्यान तो कौन करता है? उपदेशक होता है वह करता है। व्याख्यानकार तो खुद बोलनेवाले होते हैं, वक्ता होते हैं। जब कि हमारे तो टेपिरकार्डर बोलता है। व्याख्यान तो बीचवाली अवधि में, बीच के हिस्से में होता है। यहाँ हम व्याख्यान नहीं करते, क्योंकि यह अंतिम स्टेशन है। यहाँ तो प्रश्नोत्तरी के रूप में होता है। यहाँ से आगे दूसरा और कोई स्टेशन नहीं है। फिर रेलवे बंद हो जाती है। आपको अंतिम स्टेशन पर उतरना है? बाकी, बीचवाले स्टेशन पर जाना हो तो जा सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : नहीं, अब तो अंतिम स्टेशन ही चाहिए।

दादाश्री : लास्ट स्टेशन हमेशा कब आता है? अंतिम से अंतिम हद कब आती है? रेलवे कब पूरी होती है? जब प्रश्नोत्तरी होती है तब। प्रश्नोत्तरी होने पर समझना कि अब यहाँ गाडी बंद होनेवाली है, मतलब मुक्ति होनेवाली है। जिसे आखिरी स्टेशन तक जाना हो उसे प्रश्नोत्तरी के रूप में खुलासा कर लेना होता है। बाकी अन्य सभी बीचवाले स्टेशन हैं। वे स्टैन्डर्ड (कक्षाएँ) हैं, वहाँ प्रश्नोत्तरी नहीं होती है। वहाँ पर शास्त्रों का पठन और ऐसा सब होता है, उसमें व्रत-नियम होते हैं। यानी हरएक की ज़रूरत होती है न? स्टैन्डर्ड भी ज़रूरी, ऊपर के स्टैन्डर्ड की भी ज़रूरत होती है और आउट ऑफ स्टैन्डर्ड की भी ज़रूरत है। आउट ऑफ स्टैन्डर्ड मतलब मुक्त ही हो गया।

अंतिम विज्ञान, प्रश्नोत्तरी के रूप में

सारी गीता प्रश्नोत्तरी के रूप में है। अर्जुन प्रश्न करता है और कृष्ण भगवान उत्तर देते हैं। कृष्ण भगवानने गीता में प्रवचन नहीं किया है। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर ही दिए हैं। वे प्रवचन करते ही नहीं न! अंतिम विज्ञान व्याख्यान के रूप में नहीं होता, प्रश्नोत्तरी के रूप में होता है। अंत में अर्जुन को जो जो संदेह हुआ, शंकाएँ हुई उनके जवाब दिए हैं, बस। उसका नाम धर्म। गीता परिप्रश्नेन हुई है। परिप्रश्नेन यानी अर्जुन प्रश्न पूछे और कृष्ण भगवान उनके उत्तर दें। यही पूरी गीता का सार है।

मतलब कृष्ण भगवान ने क्या कहा? परिप्रश्न यानी प्रश्न पूछकर आखिरी स्टेशन पर आना। बाकी बिना प्रश्न पूछे आखिरी स्टेशन पर नहीं आ सकते।

महावीर भगवानने भी प्रश्नोत्तरी के रूप में ही कहा है। भगवान महावीर और गौतम स्वामी उन्होंने भी प्रश्नोत्तरी के रूप में ही सत्संग किया है। गौतम स्वामी और ग्यारह गणधर पूछा करते हैं और भगवान महावीर उनके उत्तर देते हैं। गणधरोंने जो पूछा था, उनके उत्तर के रूप में ही महावीर भगवान का पूरा शास्त्र लिखा गया है।

प्रश्नकर्ता : ये सभी आपके पास रोज़ाना आते हैं तब क्या वे सभी सारी ज़िंदगी आते ही रहेंगे?

दादाश्री : नहीं, नहीं। यह ज्ञान लेने के बाद सारे प्रश्नों का अंत आ जाता है। फिर प्रश्न ही नहीं उठता न! सारे प्रश्नों के आप ज्ञाता हो जाएँ फिर पूछने को ही कहाँ रहा? और यहाँ भी यह सब प्रश्नोत्तरी के रूप में ही है। हमने यह ज्ञान कैसा दिया है? प्रश्न पैदा ही नहीं होते!

यहाँ तुलना नहीं की जा सकती

ज्ञानीपुरुष के अलावा कोई प्रश्नोत्तरी नहीं कर सकता। प्रश्न का उत्तर देना वह अन्य किसी मनुष्य के बस की बात ही नहीं है। क्योंकि चार के उत्तर देने के बाद पाँचवाँ देने पर वादविवाद होने लगे और छट्ठा देने पर मार-पीट होने लगे। इसलिए लोगोंने प्रश्न पूछना बंद कर दिया। प्रश्न पूछने की नौबत आने पर वह कहे कि 'नहीं, पूछना-करना नहीं।' क्योंकि तरह-तरह के दिमाग, कौन क्या पूछ बैठे क्या पता?

प्रश्नकर्ता : कुछ संत, प्रवचनकार आप ही की तरह उपदेश चला रहे हैं, आज उनका उपदेश और आप जो कह रहे हैं उसमें मुझे बहुत साम्य (समानता) दिखाई देता है, तो क्या वे भी आपकी तरह आगे बढे हैं?

दादाश्री : मैं बोलता हूँ और वे बोलते हैं उसमें समानता लगती है सही, मगर वे तो बड़े मनुष्य हैं और मैं तो छोटा मनुष्य हूँ। मेरा बोलना और उनका बोलना, दोनों की तुलना मत करना। बराबरी नहीं करना। कहाँ वे और कहाँ मैं? क्योंकि मैं जो बोलता हूँ उसकी किसी के साथ तुलना की जा सके ऐसा इस जगत में कोई जन्मा नहीं है, अभी इस काल में। इसलिए तुलना करनेवाला जिम्मेदार होगा। वे तो बड़े मनुष्य हैं, उनके साथ इसकी तुलना नहीं करना। बड़े लोगों की बड़ी बातें होती है। उनका बड़ा है यह हम कबूल करते हैं। हम कहाँ ऐसा कहते हैं कि उनका छोटा है।

मतलब यह वाणी समझना उतना आसान नहीं है। इस वाणी का भेद समझ में आ जाए तो जय हुई कहलाए। बाकी, सब ऐसा ही लगता है, यह भी घास-चारा और वह भी घास-चारा ही है।

ज्ञानी की वाणी करे, प्रश्नों के खुलासे

जिसकी वाणी बूढ़े, जवान, शिशु, स्त्रियाँ सभी को अनुकूल आए, वह ज्ञानी। जहाँ नाममात्र को वाद नहीं है, नाममात्र को संवाद नहीं है, वह ज्ञानी। आमतौर पर बाहर जो संवाद-विवाद दिखाई नहीं देते, इसकी वज़ह यह है कि लोगों को ऐसा लगता है कि 'हमें ऐसा नहीं बोलना (पूछना) चाहिए'। और मैं तो कहता हूँ कि 'बोलो', फिर भी नहीं बोलते यहाँ। अन्यत्र तो यदि कुछ बोलो तो लोग सिर फोड़ डालें ऐसा है। हिन्दुस्तान के लोग ऐसे प्रश्न पूछते हैं कि सिर चकरा जाए, ऐसे बुद्धि के इक्के हैं। प्रश्न पूछने में बड़े ज़बर हैं।

जितनी बुद्धि बढ़ी वहाँ तक के प्रश्न खड़े होते हैं। बुद्धि से वह ऐसा समझे कि मैं जो देखता हूँ वह बराबर है।

बात समझ में आती है आपको? मतलब यह सब फेरफार हो जाएगा। यानी धर्मभावना जो लुप्त हो जाती है उसमें अब ज्यादा वृद्धि होगी। आज हमसे

जो प्रश्न पूछे जाते हैं वैसे प्रश्न पहले के जमाने में पैदा ही नहीं होते थे। लोग कहते हैं कि पहले धर्म था आज नहीं रहा है लेकिन पहले वह जो था वह धर्म ही नहीं था। मैं तो सतहत्तर साल से देखता आया हूँ, इस समय ही दिमाग ज़रा ब्रिलियंट हुए हैं। बुद्धि भले ही उलटी हो गई है मगर डिवेलप (विकसित) हुई है, पहले तो बुद्धि डिवेलप ही नहीं हुई थी न? आप पूछेंगे तो जवाब निकलेगा। सभी बहुत लोग पूछते हैं। करीबन हजारों प्रश्न पूछे गए हैं और मैंने उन सभी के उत्तर दिए हैं।

इसलिए सब पूछिये और चखना होगा तो एक दिन शक्कर मुँह में रख दूँगा (आत्मा का अनुभव करा दूँगा) तो सारा शास्त्र आ गया समझें, भगवान के अड़तालीस आगम (जैन शास्त्र) समा जाएँ उसमें।

यहाँ तो परम विनय धर्म होना चाहिए। यहाँ छान-बीन करनेवाले आते हैं, उनसे कह देता हूँ कि आप बाद में अकेले आइयेगा। वर्ना वे बुद्धि पर चढ़ जाए तो क्या करें? हमारे पास तो बुद्धि होती ही नहीं। हम सारे के सारे प्रश्नों के, सारे वर्ल्ड के प्रश्नों के खुलासे देने को तैयार हैं पर वे प्रश्न (सही मानों में) प्रश्न के रूप में होने चाहिए। आपको जिस प्रश्न के खुलासे का अभाव हो उसे प्रश्न कहा जाता है।

प्रश्नकर्ता : हम अभी एक से शिक्षारंभ करते हैं इसलिए प्रश्न कैसे पूछें?

दादाश्री : प्रश्न तो कब पूछा जाए कि जब हमारे मन में किसी बाबत को लेकर समाधान नहीं होता हो तब प्रश्न पूछा जाए।

जो-जो प्रश्न और विचार पैदा होते हों उसे यहाँ पर बोलने में हरकत नहीं है। यहाँ हर वस्तु पूछी जाए। उसका सोल्युशन होने पर हमारी समस्या हल होगी न! सारी हकीकत यहाँ जानने को मिलेगी।

प्रश्नकर्ता : कई प्रश्न ऐसे हैं कि जिनका निराकरण साइन्स में से भी नहीं मिल सकता है। वे प्रश्न अनुत्तर रहते हैं तो क्या उन प्रश्नों को अहंकार करके दबा देना?

दादाश्री : नहीं, दबाने की ज़रूरत नहीं है। प्रश्नों को देखा करने की ज़रूरत है। अंदर देखा करना कि क्या प्रश्न उठते रहते हैं। वे सारे प्रश्न सही नहीं होते हैं।

प्रश्नकर्ता : हाँ जी, वह अहंकार बाज़ नहीं आता न इसलिए प्रश्न किया करे?

दादाश्री : हाँ, प्रश्न पैदा करे। वह खुद अपना, जो होता है न (आग्रह) उसे जाने नहीं देता। अभी किसी बड़े आदमी को छेड़ें तो फिर वह अनेकों प्रश्न खड़े करेगा और अपनी बात नहीं छोड़ेगा, वैसे ही अहंकार अपनी बात छोड़ता नहीं है।

आपकी समझ में आया? समझ में नहीं आया हो तो जबरदस्ती मनवाने की बात नहीं है यहाँ पर। आप यहाँ समझें। नहीं समझ पाएँ तब तक पूछते रहिये। यह सारा विज्ञान है। बात सुनते ही यदि बुद्धि उछल-कूद नहीं करती हो तो समझना कि विज्ञान है और यदि बुद्धि उछल-कूद मचा दे तो समझना कि विज्ञान नहीं है। यहाँ बात पूछने जैसी है, अवश्य पूछना। बार-बार यह ज्ञानी मिलनेवाले नहीं हैं। यह तो आपका कोई पुण्य जागा है इसलिए भेंट हुई है। कल्पना में आए वह पूछ लेना, मैं आपको सारे प्रश्नों के जवाब दूँगा।

सारे स्पष्टीकरण मिले यहाँ

पूछने का ऐसा मौका बार-बार नहीं मिलेगा। हम आपसे बिनती करके कहते हैं कि सबकुछ पूछ लेना यहाँ। जो भी पूछना चाहें पूछ लीजिये। आज दादा से मिलना हुआ है तो पूछ लेना। कोई भी प्रश्न करेंगे तो उसका करैक्ट जवाब मिलेगा। चाहे कैसा भी प्रश्न हो आप पूछ सकते हैं। वेदांत के, जैनीज़म के कोई भी प्रश्न पूछिये। पूछ लीजिये पूछने में कोई संकोच मत रखना। ब्रेइन (दिमाग) में जो भी आए

उतना पूछ सकते हैं। मगर उलझन रहनी नहीं चाहिए यहाँ। मुझे स्पष्ट रूप से क्यों कहना पड़ रहा है? क्योंकि किसी प्रकार की कोई ग्रंथि बिलकुल नहीं होनी चाहिए। यह आधार अंतिम आधार कहलाए। जिस वाणी में बुद्धि नहीं हो वह अंतिम आधार कहलाए। बुद्धिवाली सारी वाणी कच्ची, मेरी इस वाणी में मालिकानापन नहीं है। अभी जो-सारे प्रश्न पूछे जा रहे थे वे बुद्धि के थे और मेरे जवाब ज्ञान के थे। यदि जवाब ज्ञान के रहे तो बुद्धि उछल-कूद नहीं करती वर्ना फिर प्रतिवाद करे। हमारे साथ कोई विवाद नहीं करता, फिर भी यदि कोई मनुष्य विवाद पर उतर आता है तो हम समझ जाएँ कि अंदर आड़ापन भरा पड़ा है।

प्रश्नकर्ता : आप जो जवाब दे रहे थे, उसमें सामनेवाले का यदि ऑपन माइन्ड रहा, तो एक ही प्रश्न का उत्तर सुनकर, उसे समझ में आ जाए कि यह ज्ञानी बोल रहे हैं।

दादाश्री : सारा समझ में आ जाए। मगर जो जान-बूझकर आड़ापन दिखाना चाहता हो उसका कोई क्या करे? अरे! जो सोया है वह बोले, पर जागता नहीं बोले। सोया हुआ सहज स्वभाव से बोल देगा। लेकिन जागता तो बोले ही क्योंकर? वैसे ही जान-बूझकर आड़ापन करना हो तब उसका उपाय ही क्या है? हमारे पाँच वाक्यों का सोल्युशन यदि सुने तो वह तुरंत समझ जाए कि बिना ज्ञानीपुरुष के ऐसा सोल्युशन अन्य कोई दे ही नहीं सकता।

यह तो ग्रंथियाँ सुलझाने का स्थान

प्रश्नकर्ता : आप जो वार्तालाप करते हैं उसका बहुत असर होता है।

दादाश्री : हाँ, यह जो बातचीत होती है उसका बड़ा असर होता है, भारी असर होता है। क्योंकि प्रश्नकर्ता अपनी दुविधा की बातें करे इसलिए उसकी दुविधा दूर हो जाए, इसका उस पर बहुत असर होता है। प्रत्येक मनुष्य अपनी-अपनी दुविधाओं के बारे में बात करे। हम तो उसे प्रश्न करने को कहें और इसलिए वह फिर अपनी जो भी दुविधा पैदा हुई हो वह प्रस्तुत करे। और फिर वह दुविधा दूर हो जाए, उसका समाधान हो जाए, उसे आनंद हो जाए।

प्रश्नकर्ता : मगर ऐसा व्यवहार तो कहीं भी नहीं है कि सामने बैठकर प्रश्नों का समाधान प्राप्त होता हो?

दादाश्री : होता ही नहीं! ऐसा कर ही नहीं सकते न! एक प्रश्न बर्दाश्त नहीं कर सकता मनुष्य। ये जो सारे प्रवचनकार हैं उनमें से एक भी प्रवचनकार प्रश्नों के उत्तर नहीं दे सकता। और फिर उत्तर देगा कहाँ से? वह तो शास्त्र की बात करेगा कि शास्त्र में ऐसा कहा गया है। दूसरी बात नहीं कर सके।

ज्ञान में हमें सब दिखाई दे। सारे पर्यायों का हमें पता चले। प्रत्येक पौद्‌गलिक पर्याय जो भी है, वे सारे हमें सूक्ष्म रूप से दिखाई दें इसलिए हम आपको जवाब दे सकें।

अलौकिक फल यहाँ

प्रश्नकर्ता : ज्ञानीपुरुष से पूछनेवाले को क्या फल मिले?

दादाश्री : ज्ञानीपुरुष से पूछनेवालों को अलौकिक फल मिलता है। और अज्ञानी से पूछनेवालों को लौकिक फल मिलता है। क्या लौकिक फल नहीं मिलता? कभी आपने अज्ञानी से पूछा होगा कि, 'स्टेशन जाने का रास्ता कौन-सा है?' या 'मुंबई में यह जगह कहाँ पर है?' तो तुरंत (लौकिक) फल मिलता है। वैसे ही यहाँ अलौकिक फल मिलता है।

पहले खुलासा चाहिए

हमारे घर की बिजली चली जाए तो हम कैन्डल जलाते हैं, पर बिजली आते ही क्या कैन्डल बुझा नहीं देते? मतलब, मुझे (दादाश्री) क्या ज़रूरत उस कैन्डल की? अरे... फूल प्रकाश! सारे संसार की सब चीजें दिखाई दें और लाखों प्रश्न पूछे जाते

हैं और उन प्रश्नों के इग्ज़ैक्ट जवाब निकलते हैं। हमें क्या कम प्रश्न पूछे गए होंगे?

प्रश्नकर्ता : अनेकों पूछे गए होंगे।

दादाश्री : एक जगह पंद्रह सौ से दो हजार लोग जमा हुए थे, उसमें प्रश्नों की झड़ी बरसने लगी। मैंने छूट दे रखी थी। मैंने कहा था कि खुले दिल से जिसे जो प्रश्न पूछने हों पूछिये। दो-तीन दिनों तक बहुत प्रश्न पूछे गए। आज वे लोग मुझसे आ मिलते हैं और दर्शन करने आते हैं। मैं उनसे पूछता हूँ, 'ज्ञान लिया आपने?' तब वे कहते हैं, 'नहीं लिया, ज्ञान अभी लेना है। लेकिन बिना ज्ञान लिए ही आपकी बात हमें परिणाम में आ गई है।' मैंने पूछा, 'क्या पाया?' तब वे कहते हैं, 'हमने जो प्रश्न किए थे, उसका खुलासा हुआ, वे खुलासे ही काम कर रहे हैं। हमें अंदर बहुत शांति रहती है। अन्य किसी चीज़ की हमें ज़रूरत नहीं है क्योंकि कहीं पर भी हमें ऐसे खुलासे मिले नहीं थे। जो खुलासा चाहते थे वह कोई कर नहीं सका था।' ऐसा हो सकता है कि नहीं?

यहाँ समझ में आए तमाम शास्त्र

प्रश्नकर्ता : ऐसे ज्ञान के बिना, ऐसे खुलासे नहीं मिलते।

दादाश्री : अमरिका में एक विज्ञानी था, उसने जितने भी प्रश्न किए, मैंने उन सभी के जवाब दिए। वह सुनकर मुझसे कहने लगा, 'आप तो ऑब्झर्वेटरी हैं वर्ल्ड की (विश्व की वेधशाला)।' उनके सारे प्रश्नों का खुलासा हो गया। मैं साइन्टिस्टों को सब देने को तैयार हूँ, मगर वे मुझसे मिले तब न! सारे संसार के साइन्टिस्ट साथ मिलकर आएँ तो सब देने को तैयार हूँ। सारा वर्ल्ड आगे बढ़ जाए उतना देने को तैयार हूँ।

भगवान कैवल्यज्ञान स्वरूप

प्रश्नकर्ता : आपके ज्ञानवाक्यों में विरोधाभास नहीं है। सारे नयों से ऊपर है। लोग सभी व्यू पोइन्ट से देखते हैं और आपका यह, व्यू पोइन्ट से ऊपर का है।

दादाश्री : कैवल्यज्ञान है, और जब तक कैवल्यज्ञान नहीं हुआ हो तब तक व्यू पोइन्ट है। कैवल्यज्ञान हुआ मतलब व्यू पोइन्ट नहीं रहा, ३६० डिग्री। मैं खुद ३५६ डिग्री पर हूँ मगर यह ज्ञान ३६० डिग्री का है।

प्रश्नकर्ता : ऐसा कैसे?

दादाश्री : यह 'दादा भगवान' वही ३६० डिग्री है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन भगवान जो बोलें वह तो आपके द्वारा ही बोलें न?

दादाश्री : नहीं, भगवान बोल ही नहीं सकते! और मैं भी बोल नहीं सकता।

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं कि दादा भगवान ३६० डिग्री के और आप ३५६ डिग्री के। यह तो हमने मान लिया लेकिन ३५६ डिग्री के द्वारा ३६० डिग्री का ज्ञान कैसे निकले?

दादाश्री : वह ३५६ डिग्री के द्वारा नहीं निकलता, यह तो ऑरिजिनल टेपरिकार्डर के द्वारा निकलता है। यह बिना मालिकानापन की वाणी है। नहीं है यह 'दादा भगवान' की वाणी और मेरी भी वाणी नहीं हो सकती। 'दादा भगवान' की वाणी होती तो 'दादा भगवान' बारह सौ रुपये के (यांत्रिक टेपरिकार्डर की क़ीमत जितने) हो गए। यह 'दादा भगवान' खुद ही 'कैवल्यज्ञान स्वरूप' हैं। ३६० डिग्री का यह ज्ञान है।

देशना, शुरू से अंत तक

प्रश्नकर्ता : आपने कहा कि मेरी ३५६ डिग्री है। तो यह ३५६ डिग्री इस वाणी में क्या मदद करे?

दादाश्री : कोई मदद नहीं करती। वह

टेपरिकार्डर तो तैयार हो गया है इसलिए मदद करने को रहा ही क्या? उसे देखे कि उसमें कोई भूल रह गई है, इसकी तलाश करे।

देशना की शुरूआत हुई वहाँ से लेकर, फिर देशना के अंत को संपूर्ण देशना हुई कहलाए। तीर्थंकरों की संपूर्ण देशना कहलाए लेकिन शुरूआत होनी है वह तो कोई एक जगह से ही होगी न?

प्रश्नकर्ता : कोई एक जगह से, मतलब कहाँ से?

दादाश्री : यह हमारी जगह से, हम बोलते हैं न, यानी देशना की शुरूआत यहाँ से होती है।

प्रश्नकर्ता : इसे देशना की शुरूआत हुई क्यों कहलाए?

दादाश्री : अहंकार पिघल गया हो तब से देशना की शुरूआत होती है। अब देशना की शुरूआत हुई वहाँ से, 'बिगिनिंग से एन्ड' (शुरू से अंत) तक वह देशना ही है। हरेक की शुरूआत तो होती है न? क्या सूर्यनारायण के उगने की शुरूआत नहीं होती? और उसका एन्ड भी होता है न? तब तक सूर्य वही का वही लेकिन फल अलग-अलग देता है।

प्रश्नकर्ता : आपकी चार डिग्री पूरी हो जाए, कैवल्यज्ञान हो जाए, फिर देशना रहे या नहीं रहे?

दादाश्री : देशना तो रहे! ऐसा है कि कैवल्यज्ञान होने के बाद जो वाणी बोली जाए वह देशना ही कहलाए।

वह वाणी ही भिन्न तरह की

यह हमारी जो देशना निकलती है उसमें और तीर्थंकरों की देशना में कितना अंतर है कि यह पेड़ पर जो नहीं पका ऐसा पकाया हुआ आम है और तीर्थंकरों की देशना पेड़ के अधपके आम को पकाया गया हो ऐसा आम है। इसलिए हमारी देशना ज़रा फीकी लगे। उतना रसास्वाद नहीं आता हमारी देशना में क्योंकि अधपका होने से पहले पकाए गए आम के समान है। वर्ना मनुष्य मंत्रमुग्ध हो जाएँ। आज भी मंत्रमुग्ध हो जाते हैं, पर ज़रा फीकापन है। लेकिन सभी अपनी-अपनी भाषा में समझ जाएँ। वैष्णव हों, स्वामीनारायणवाले हों, जैन हों, मुस्लिम हों या दिगंबर हों लेकिन वे सभी अपनी अपनी भाषा में समझ जाएँ कि मैं क्या कहना चाहता हूँ।

इस समय यहाँ मुस्लिम, पारसी, स्थानकवासी, दिगंबर, श्वेतांबर सारे जैन, वैष्णव, शिवधर्मी वे सभी मेरी वाणी सुनें तो उन सभी को एक समान लगे। उन्हें बिलकुल ऐसा नहीं लगता कि यह वाणी पक्षपाती निकलती है। वर्ना उठकर चलते बनें। यह वाणी किसी धर्म का किंचित्मात्र प्रमाण नहीं दु:खे ऐसी होती है, मीठी होती है। यहाँ से उठने को मन नहीं करता। सुनते-सुनते सुबह हो जाए तो भी उठने का मन नहीं होता। यानी ज्ञानीओं की वाणी यदि इतनी मीठी है तो तीर्थंकर भगवान की वाणी कितनी मीठी होगी?

तीर्थंकर भगवान की देशना अलग तरह की होती है, कम्पलीट (संपूर्ण) स्यादवाद वाणी। किसी धर्म का किसी तरह किंचित्मात्र खंडन नहीं होता। देशना फूल स्टेज की होनी चाहिए। हमारी फूल स्टेज की नहीं कहलाए। स्यादवाद है मगर स्यादवाद अपने असल स्टेज पर आसीन नहीं। फूल स्टेज की देशना, वह वाणी ही अलग तरह की होती है, उसका रस अलग तरह का होता है।

हमारी भी देशना ही होती है मगर हमारी देशना उपदेश-आदेश के डंकवाली होती है। किसी प्रकार का खिंचाव नहीं। सभी ज्ञातियाँ सुनें। सभी अपनी भाषा में समझें, जानवर भी अपनी भाषा में समझें। इसका तो हमने भी अनुभव किया है कि हमारी भाषा जानवर समझते हैं लेकिन हमारी कम समझें और तीर्थंकरों की पूरी समझ जाएँ।

सहज स्वभाव से निकले...

प्रश्नकर्ता : देशना का स्वरूप समझाइये।

दादाश्री : देशना मतलब, ऐसे ही सहज स्वभाव से वाणी निकलती रहे, बोले नहीं। स्वाभाविक वाणी निकलती रहे, उदयभाव से। उसका आयोजन नहीं, इच्छापूर्वक नहीं। किसीको करना नहीं पड़े और नीडरता से निकलती रहे, कोई कुछ डर नहीं कुछ।

प्रश्नकर्ता : उस समय क्या कोई सुननेवाला होता है ? देशना माने, क्या उसे सिर्फ सुनना ही होता है?

दादाश्री : वहाँ सुनना ही होता है। देशना उसीका नाम कि केवल सुनना ही होता है। सभी जमा होते हैं। तीर्थंकर को कैवल्यज्ञान होने के बाद देवतागण समवसरण की रचना करें (तीर्थंकर भगवान की चारों ओर धर्मसभा की रचना करते है, जिसमें पशु, पंखी, मनुष्य और देवतागण सभी देशना सुनने आते हैं), उस समय यह वीतराग भगवान की वाणी देशना के रूप में निकलती ही रहे और सभी अपनी-अपनी भाषा में समझ जाएँ। वहाँ सभी लोग इकट्ठा होने के बाद भगवान की देशना निकलती ही रहे, जितना उसका उदय हो उतने काल के लिए वह देशना होती रहे और फिर समाप्त हो जाए।

प्रश्नकर्ता : तीर्थंकर भगवान की देशना जो सुन रहे थे, उन सभी को उनके दर्शन हो गए थे इसलिए जिन्होंने देशना सुनी थी वे सभी मोक्ष में गए होंगे न?

दादाश्री : हाँ, ज्यादातर मोक्ष में गए थे।

बिना मालिकानापन की वाणी

प्रश्नकर्ता : देशना मतलब प्रश्नोत्तरी कह सकें?

दादाश्री : देशना माने क्या? वह प्रश्नोत्तरी के रूप में या चाहे किसी भी रूप में हो, देशना यानी सहज वाणी निकलते रहना और जैसे टेपरिकार्डर में से निकलती रहती है वैसे निकलती रहे। भगवान महावीर की भी टेप में से निकला करती थी और हमारी भी यह टेप में से निकलती है।

देशना निरहंकारी गुण है इसलिए वह अहंकाररहित होती है। जिसका अहंकार खलास हो गया हो वह उपदेश नहीं कर सके, उसकी देशना होती है। जिसका बोलनेवाला नहीं है। 'मैं बोला' ऐसा जिन्हें मालिकानापन नहीं है, 'मैंपन' का मालिकानापन नहीं, मेरापन का मालिकानापन नहीं है। जिन्हें 'माइ स्पीच' जैसा नहीं है, उनकी सारी वाणी देशना कहलाए। मालिकीवाली वाणी राग-द्वेषवाली होती है।

अपनापा जाने के बाद, खरी वाणी तत्पश्चात् निकले।

देशना, स्व-उपयोग सहित

प्रश्नकर्ता : देशना दी गई, वह 'मैं' करके तो दी ही नहीं गई न?

दादाश्री : नहीं, 'मैं' तो होता ही नहीं न?

प्रश्नकर्ता : कैवल्यज्ञानी स्व-उपयोग में ही बरतें, फिर भी वे देशना देते हैं तब उसे पर-उपयोग नहीं कहा जाए?

दादाश्री : नहीं, वह तो स्वाभाविक निकलती रहे। टेपरिकार्डर निकलता रहे। खुद कर्त्ता नहीं है। अपनेआप निकलता रहे। खुद स्व-उपयोग में ही होते हैं। इसलिए पर-उपयोग करना ही नहीं पड़ता उनको, इसलिए वाणी अपने-आप सहज निकलती रहे।

मालिकानापन नहीं है, इसलिए देशना

प्रश्नकर्ता : आपकी वाणी निकलती हो उसमें, यह दोष हुआ तो उसका ऐसे प्रतिक्रमण करना पड़े, यह नहीं करना चाहिए, ऐसा होना चाहिए, वें सारी बातें निकले, और कोई छः तत्वों के बारे में पूछे तो वह निकले, इन सभी का देशना से कैसे संबंध जुड़ा रहता है?

दादाश्री : यह तो आप पूछें उसका समाधान ऐसा निकले। वर्ना यों सहज निकल रही हो उसमें ऐसा कुछ नहीं निकलता। जो कुछ पूछा जाए उसका जवाब शब्दों में तो देना पड़ेगा न?

प्रश्नकर्ता : पूछे उस वक्त शब्दो में जवाब निकले लेकिन क्या वह सब देशना में समाविष्ट होता है?

दादाश्री : हाँ, क्योंकि सारे शब्द बिना मालिकानापन के हैं। बिना मालिकानापन की सारी वाणी, सभी, देशना ही कहलाए।

प्रश्नकर्ता : तीर्थंकरोंने भी देशना को डिस्चार्ज स्वरूप ही माना होगा न?

दादाश्री : हाँ, कम्पलीट डिस्चार्ज। और हमारे में अंदर थोड़ा कच्चापन होता है, कभी किसी समय भूल होना संभव है। मगर उसे देशना ही कही जाए। उसमें कभी कोई भूल होती है लेकिन वह बिना मालिकानापन की वाणी है।

देशना वह समझ के रूप में

प्रश्नकर्ता : देशना मतलब क्या वह आज्ञा के रूप में होती है?

दादाश्री : उपदेश आज्ञा के रूप में होता है। देशना समझ के रूप में होती है। आप समझें। फिर भी हमारी आज्ञा उपदेश के रूप में नहीं है, देशना के रूप में है। वह आज्ञा कहलाए, केवल उतना ही, किन्तु है वह देशना के रूप में।

हम जो पाँच आज्ञा देते हैं वह, जैसे महावीर भगवान दिया करते थे वैसी आज्ञा देते हैं। यदि आज्ञा पालें तो निरंतर समाधि रहनी चाहिए, ऐसी हमारी शर्त होती है। कैसी भी परिस्थिति में समाधि रहे, वह दादा की पाँच आज्ञा और उसमें अहंकार होता नहीं! जिन्हें अहंकार नहीं हो उनकी आज्ञा पाली जाए।

आज्ञा तो केवल इन दोनों की ही पाली जाए, तीर्थंकर भगवान और अक्रम विज्ञानी की। जिनमें अहंकार खलास हो गया हो उनकी ही आज्ञा पाली जाए। अन्य किसी की नहीं पाली जाए। कषाय नष्ट हुए हों तभी आज्ञा पाली जाए, वर्ना किसी कषाययुक्त मनुष्य की आज्ञा पाल ही नहीं सकते और आज्ञा देनेवाला भी दे ही नहीं सकता। आज्ञा देना वह भी गुनाह है। कषाययुक्त मनुष्य से तो उपदेश तक नहीं दिया जाए।

यह देशनारूप है, उपदेश नहीं है। सहज निकली वाणी है। तीर्थंकर और ज्ञानी की वाणी सहज होती है, देशनारूप होती है। उपदेश के रूप में नहीं होती।

यहाँ पर देशना मतलब सहज स्वभाव, और जो हमारी देशना है वह सहज निकला करे। हमारा इसमें लेना-देना नहीं है। तीर्थंकरों की और यह हमारी देशना, दोनों सहज निकले। सरल, सहज। सहज क्रिया हो रही होती है।

छठवाँ गुणस्थान उपदेश के रूप में होता है और वहाँ अहंकार होता है इसलिए अहंकार करके उपदेश करे। मतलब उपदेश, आदेश नहीं। आदेश तो मिथ्यात्व में होता है। 'यह फलाँ छोड़े, आप यह छोड़िये'। यानी हम(लोग) समझ जाएँ कि यह हमें आदेश करते हैं? उपदेश में, 'यह छोड़िये', ऐसा बोलना नहीं होता। उपदेश में तो जो है वैसा ही बोलना होता है।

उपदेश और आदेश में तो आज्ञा समायी है। और देशना में उपदेश नहीं, आदेश भी नहीं, सहज वाणी बहती रहे। तीर्थंकर भगवान की देशना निकलती ही रहे। वह भी टेपरिकार्डर कहलाए। जब जगत समझेगा कि ऐसी वाणी टेपरिकार्डर है, तब जगत दंग ही रह जाएगा कि क्या वाणी वह टेपरिकार्डर है!

यह बात एक दिन समझनी तो पड़ेगी न?

जय सच्चिदानंद

Dada Bhagwan Gurupurnima 2008 - Toronto

You are heartily invited to attend the Grand Celebration of Gurupurnima 2008 Toronto, in the physical presence of Aatmgnani Pujya Deepakbhai Desai and the subtle presence of Pujya Niruma and Dada Bhagwan. Come to Toronto and celebrate the Gurupurnima of Akram Vignani Param Pujya Dada Bhagwan, in this - His Centennial Birth Year.
For more details visit **http://www.dadagurupurnima.com** and complete your Gurupurnima registration.

Youth Shibir	**Fri, 11th July - Sun, 13th July** (15-25 yrs, separated by gender)		
Local Satsang	**Sat, 12th July**	**Gnan Vidhi**	**Sun, 13th July**
Satsang Shibir	**Mon, 14th July - Fri, 17th July**	**Gurupurnima**	**Fri, 18th July**

VENUE : **Sheraton Parkway Toronto North Hotel**, 600 Highway 7 East (at Highway 7 & 404), Richmond Hill, **Ontario L4B 1B2** Canada.
Tel : 416-675-3543, **e-mail :** toronto@dadabhagwan.org

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

त्रिमंदिर अडालज में परम पूज्य दादा भगवान की गुरुपूर्णिमा - १ से ३ अगस्त

१ अगस्त (शुक्र), **सुबह** ९-३० से १२ (वी.सी.डी./अनुभव), **शाम** ४-३० से ६-३० - **प्रश्नोत्तरी सत्संग**
२ अगस्त (शनि), **सुबह** ९-३० से १२, **शाम** ४-३० से ६-३० - **प्रश्नोत्तरी सत्संग**
3 अगस्त (रवि), **सुबह** ९ से १२ - **पूजन - दर्शन - भक्ति (गुरुपूर्णिमा)**
१० अगस्त (रवि), **दोपहर ३-३० से ७** - **ज्ञानविधि** (आत्मसाक्षात्कार पाने का भेदज्ञान का प्रयोग)
सूचना : उपरोक्त कार्यक्रम में भाग लेने हेतु ०७९-३९८३०४०० या अपने नजदीकी सत्संग सेन्टर पर १५ जुलाई २००८ तक अवश्य रजिस्ट्रेशन करवायें.

बेंगलूर

17 अगस्त (रवि), **शाम** 6 से ८-३० - **प्रश्नोत्तरी सत्संग**
स्थल : जलाराम भवन, २९/२८, सेकन्ड मेइन इन्डस्ट्रीअल टाउन, वेस्ट ओफ क्रोड रोड, राजाजीनगर, बेंगलूर-१०
१८-१९ अगस्त (सोम-मंगल), शाम ६ से ८-३० - **प्रश्नोत्तरी सत्संग** **संपर्क :** 9341948509
२० अगस्त (बुध), शाम ५-३० से ९ - **ज्ञानविधि** (आत्मसाक्षात्कार पाने का भेदज्ञान का प्रयोग)
स्थल : शिक्षक सदन ओडिटोरियम होल, कावेरी भवन के सामने, के.जी. रोड, बेंगलूर-२.

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल्स पर

भारत + **'दूरदर्शन' (नेशनल) पर सुबह ७-३० से ८ (गुरु-शुक्र) 'नई दृष्टि, नई राह'**
+ दूरदर्शन मराठी 'सह्याद्रि' पर सुबह ७-३० से ८ (सोम, मंगल, गुरू) - मराठी भाषा में
+ गुजरात में 'दूरदर्शन' पर प्रतिदिन दोपहर ३-३० से ४ (अन्य राज्यो में डीडी-गुजराती पर उसी समय)
+ समग्र विश्व में (भारत के अलावा) सोनी टीवी पर (सोम से शुक्र) सुबह ७ से ७-३०, (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल्स पर

भारत + 'Zee Gujarati' पर हररोज सुबह ७ से ७-३० (गुजराती में)
+ 'दूरदर्शन' डीडी-गुजराती पर प्रतिदिन रात्रि ९ से ९-३० - 'ज्ञानप्रकाश' (गुजराती में)

जून २००८
वर्ष-३, अंक - ८

दादावाणी

RNI No. GUJHIN/17258/05
Reg. No. GAMC - 1500
Valid up to 31-12-08
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

ज्ञानी निरंतर ज्ञाता-द्रष्टा, वाणी के

'मैं' (आत्मा) और (यह वाणी) 'बोलनेवाला' दोनों अलग है। (यह वाणी) 'बोलनेवाला' ऑरिजिनल टेपरिकार्डर है और 'मैं' जाननेवाला हूँ। यह टेपरिकार्डर *(हमारे मुख से नीकली वाणी)* में कहाँ-कहाँ भूल है? कौन-सी भूल है और कौन-सी नहीं, इन सबकी मैं निगरानी किया करूँ। कौन-सा शब्द उलटा निकला? कौन-सा शब्द सुलटा निकला? सामनेवाले को फायदा हो रहा है या नहीं? कौन-सा शब्द बाधाकर्ता है? कौन-से शब्द में बहुतायत है? कौन-सा शब्द कम पड़ता है? कौन-सा शब्द गैरवाज़िब है? उससे सामनेवाले को दुःख होगा या नहीं? उसका मुझमें निरंतर रिसर्च (अनुसंधान) जैसा चलता रहे। मतलब यह टेपरिकार्डर कैसा निकलता है और क्या निकलता है, उसे देखना और जानना, यही मेरे अभ्यास में होता है। सबकुछ 'हमारे' ख्याल में आ जाता है।

- दादाश्री

Publisher & Editor Mr. Deepakbhai Desai on behalf of Mahavideh Foundation Printed at Mahavideh Foundation Printing Press - Parshvanath Chembers; Income Tax, Ahmedabad-14 and published.